परमानन्द संदेश

जनवरी १९६३

राष्ट्रहित-चिन्तन अङ्क

वर्ष ३ अङ्क ३

पौष २०१९

वर्ष ३ अङ्क ३
पौष २०१९
जनवरी १९६३

परमानन्द संदेश

सचित्र आध्यामिक, धार्मिक मासिक

राष्ट्र-हित-चिन्तन अङ्क

संस्थापक

श्री १०८ सद्गुरु बाबा शारदाराम मुनिजी महाराज, श्रीतीर्थ रामटेकड़ी, पूना

सम्मान्य संरक्षक

मण्डलेश्वर श्री स्वामी गंगेश्वरानन्दजी महाराज

संचालक

श्री अजित मेहता [बी० ई० सिविल]

सदस्यता शुल्क

साधारण सदस्यों के लिये

५) पांच रुपए वार्षिक

स्थायी सदस्यों के लिए

२५) पच्चीस रुपए ६ वर्षों तक

आजीवन सदस्यों के लिए

१५१) एक सौ इक्यावन रुपये

—※—

साधारण अंकोंका मूल्य—५० नये पैसे

पत्र-व्यवहार का पता :—

शारदा प्रतिष्ठान

सी० के० १५।५१ सुड़िया, बुलानाला

वाराणसी—१

※ समर्पण ※

जिनसे

लवलेश मात्र शक्ति प्राप्त कर

त्रिगुणात्मिका माया अखिल ब्रह्माण्डके रूपमें भासती है !

जिनकी कृपा से

यह जड़ शरीर कन्धे पर बन्दूक और देश-धर्मकी रक्षाका

भार वहन करता है,

उन्हीं अनादि, अनन्त, निर्विकार, सर्वशक्तिमान, अजर-अमर

गुरु परमात्माके अलख व्यापक चरणाम्बुजोंमें

"परमानन्द संदेश" का

यह राष्ट्र-हित-चिन्तन अंक

सादर समर्पित है ॥

घट-घट को चैतन्य करने वाले सच्चिदानन्द

भारतके जन-गण और वीर सैनिकों को

देश-धर्म, मानव जाति एवं आत्मरक्षार्थ

रणभूमि में

सर्वस्व न्यौछावर कर देने की

प्रबल शक्ति प्रदान करें ।

———

धन्य यह भारत भूमि महान !

श्री हंस मुनि

⊙

दुनियां जिसकी प्रगट आज भी करती कीर्ति बखान।
इसी भूमिमें कलिमल हरणी, गंगादिक नदियाँ बहती।
धर्म, ज्ञानकी खान भूमि यह, गान सभी श्रुतियाँ करतीं ॥
स्वरमें बैठे हुए देव गण, गाते जिसका गान ॥धन्य यह भारत...॥
सती शाण्डिली सावित्री सीता अनुसुइया सी नारी।
हुई अनेकों पतिव्रता, वृन्दा वैदर्भी गन्धारी ॥
पटल दिया च्तण माहिं जिन्होंने, विधिके विविध विधान ॥धन्य ...॥
इसी भूमिमें कपिल कणादिक, गौतम व्यास वरिष्ठ हुए।
वाल्मीकि नारद सनकादिक, मुनिवर ब्रह्म वशिष्ठ हुए ॥
प्रगट हुए बालक इसमें ही, ध्रुव प्रह्लाद समान ॥धन्य यह...॥
हुए अनेक धर्म धुरन्धारी, भूपति इन्द्र समान यहीं।
देखा-सुना नहीं जाता था, भारत सा विज्ञान कहीं।
हैं प्रसिद्ध बल हनूमान का, अर्जुन का धनु-बान ॥धन्य यह...॥
इस भारत के मध्य अनेकों पुण्य तीर्थ अघहारी हैं।
काशी मथुरा पुरी अयोध्या तीन लोक से न्यारी है ॥
है अखण्ड भूमण्डल का यह गुरुकुल परम प्रधान ॥धन्य यह...॥
शिव विरञ्चि इन्द्रादि देव ने, जिसका पार न पाया है।
अगुण अपार अलख अविनाशी, जाहि वेद ने गाया है।
इसी भूमि में सन्तन के हित प्रगटे सोई भगवान ॥धन्य यह...॥
इस भारत के पशु पत्ती भी बड़े-बड़े विज्ञानी थे।
काग भुशुण्डी गरुड़ गीध गज हनूमान से ज्ञानी थे ॥
हंस गहो गुरुज्ञान अगर तुम चाहो पद निर्वान ॥धन्य यह...॥

———
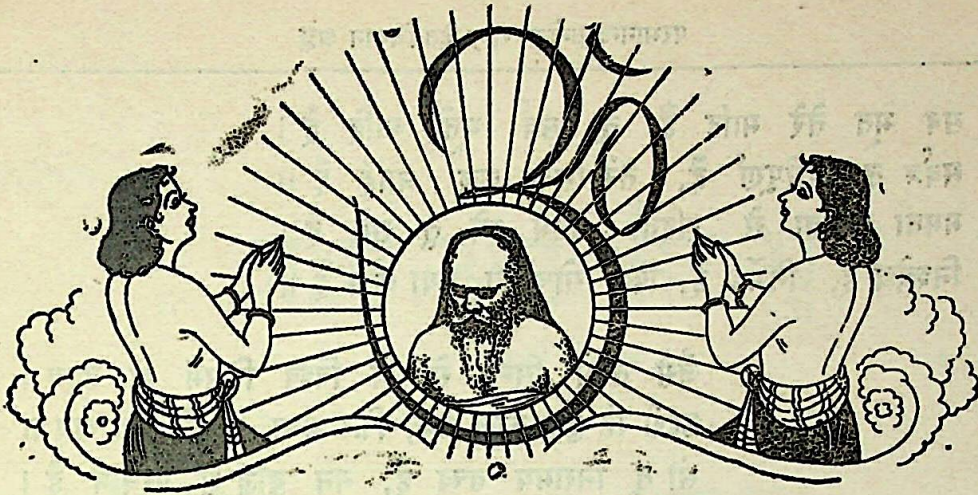
ॐ जय सद्गुरु शारदाराम

परमानन्द संदेश

दुख खण्डन परमानन्द मण्डन, है इस पत्र का भाव।
पढ़े सुनै अमलो बनै, सो लख पावै प्रभाव॥

वर्ष ३ अङ्क ३ | वाराणसी पौष संवत् २०१९ जनवरी १९६३ई० | वार्षिक चन्दा ५) पाँच रुपये

सोच का क्या काम है!

नहिं देह तू नहिं-देह तेरा, देह से तू भिन्न है।
कर्ता भोक्ता नहीं, कामादिकों से अन्य है॥
आनन्द हैं, चिद्रूप है, सद्रूप है, निष्काम है।
कूटस्थ है, निस्संग है, फिर सोच का क्या काम है॥

निःशोक है, निर्मोह है, तुझमें नहीं है भय कहीं।
रागादि मन के दोष हैं, तू मन कभी भी है नहीं॥
अज्ञान तुझमें है नहीं, बोधात्म तेरा नाम है।
निर्दोष है तू निर्विकारी, शोच का क्या काम है॥

सब भूत तेरे माहि हैं, तू सर्व भूतों माहि है।
सर्वत्र तू परिपूर्ण है, तेरे सिवा कुछ नाहिं है॥
ममता अहंता से रहित, सबमें रमे तू राम है।
निश्छेद्य है, निर्भेद्य है, फिर सोच का क्या काम है॥

जैसे तरंगें सिन्धु से, ये विश्व जिसमें हो उदय।
ठहरी रहे कुछ काल तक, फिर अन्त में हो जाय लय॥
सो तू निरामय तत्त्व है, मन बुद्धि से परधाम है।
वाणी जहाँ नहिं जा सके फिर सोच का क्या काम है॥

विश्वास कर, विश्वास कर, मत मोह को तू प्राप्त हो।
हो आपमें सन्तुष्ट केवल आपमें सन्तृप्त हो॥
नहिं हाड़ तू, नहिं मांस है नहिं रक्त है नहिं चाम हैं।
है देह तीनों से परे, फिर सोच का क्या काम है॥

गुणयुक्त है यह देह आता है चला फिर जाय है।
आत्मा अचल परिपूर्ण है, नहिं जाय है नहिं आय है॥
तिहुँ देह का, तिहुँलोक का, तिहुँ काल का विश्राम है।
घटता नहीं बढ़ता नहीं फिर सोच का क्या काम है॥

यह देह ठहरे कल्प तक, या आज उसका अन्त है।
तेरा न कुछ बिगड़े बने, यह जानकर निश्चिन्त हो॥
दिन रात तुझमें है नहीं, नाँहीं सवेरा शाम है।
तू काल का भी काल है, फिर सोच का क्या काम है।

अध्यस्त तुझमें विश्व है तू विश्व का आधार है।
स्वच्छन्द है, निर्द्वन्द्व है, भयमुक्त है; भव पार है।
श्रुति सन्त सब ही कह रहे, कहता यही प्रभु श्याम है।
भोला! नहीं है दूसरा, तो सोच का क्या काम है॥

—श्री भोला बाबा

उद्‌बोधन—

जाग उठो वीर पुत्र

आचार्य भद्रसेन

⊙

देशके सपूत !
आज तुमसे कुछ कहना है।
देश और धर्मकी—
डगमगाती नैयाके
तुम ही पतवार हो,
भावी भारतके
तुम ही प्रधान हो,
जनगणके प्राण हो,
राष्ट्र कर्णधार हो,
नेता हो जनबलके।
शीतल और शान्त
हिमगिरिकी कन्दराको—
तपती हुई धूनीको
मानस सरोवरमें
परमसुख हंसोंको
छोड़कर—
इतनी दूर आया हूं।
पूछते हो क्यों ?...
इसलिये कि
पुत्र मेरा दुःखी है,
भरत पुत्र भटक गया,
वीर पुत्र कायर हो

याचक बन—
दूसरोंकी ड्योढ़ी पर बार बार जाता है।
तेरा मैं पिता हूँ,
तेरा हितचिन्तक हूँ,
एक बात कहनेको इतनी दूर आया हूँ।
अब भी समय है,
चेतो सम्भल जाओ।
कान खोल सुन लो—
"सिंह हो तुम—
अर्जुन सम वीर हो तुम—
कपिल कणाद सम विज्ञानी महात्मा हो,
राम और कृष्णका
मनु-सतरूपाका
खून तेरी नशमें है,
अपने स्वरूपको अब भी पहचानो तुम।
दूसरोंके कहने पर
अपनेको गीदड़ मान
विदेशियोंके सामने लार टपकाते हो,
दुमको हिलाते हो,
शर्म करो—
लानत है—
कैसे सम्हालोगे देशका भार तुम।

झाँसीकी रानीने
खूनसे सींचा जिसे,
गाँधीने खून दे
बचाया जिसे आँधीसे,
अनेकों शहीदोंका खून पीकर—
जवाहरके त्यागसे
नेहरूके तपसे
पौधा आजादीका
आज—
फलवान हुआ,
बालो ?
रखवाली कैसे करोगे तुम ?
इन निर्बल हाथोंसे,
इस दुर्बल तनसे,
मदिरा माते दूषित विचारोंसे,
कैसे उठाओगे ?
भार इस जनगणका,
घर और गाँवका,
कुल परिवारका।
कैसे बचाओगे ?
सीमा पर बैठे—
शत्रुकी कुटिल कुदृष्टिसे
कोहनूर हीरेकी खान
इस भारतको,
सोनेकी चिड़िया
जो
ऋषियोंकी भूमि है,
मुनियोंकी भूमि है,
रामकी अयोध्या
और
कृष्णकी मथुराको।
गंगा-जमुना-नर्वदा
गोदावरी कृष्णाके
पावन संदेशोंकी
रक्षा करोगे कैसे ?
शिवाके स्वदेश पर,
शंकरकी धूनी पर,
शत्रु मड़राता है।
तेरे प्रमादसे,
तेरे अज्ञानसे,
कुटिल पड़ोसी आज—
जाल फैलाते हैं।
स्वतन्त्रता और
शान्तिके,
समृद्धि सद्भावनाके,
दुर्लभ खजानेको—
असुरक्षित देखकर,
शान्तिके उपासकको
शस्त्रहीन देखकर,
नास्तिक शत्रु—
भूखा भेड़िया बन
जीभ चटकारते हैं,
पञ्जे फटकारते हैं।
यही समस्या है—
इसलिये आया हूँ
कि
तुमको जगा दूँ,
तुमको चेता दूँ,

युवक हो
भोले हो
अनुभवसे शून्य हो ।
बुड्ढेकी एक बात
यदि तुम मान लो,
भारतका सीना
दूना हो जायगा ।
सब कुछ जाता है—
जाने दो ।

अपना चरित्र तुम रखना सम्हाल कर,
यही वह रतन है—
जिसके बराबर,
त्रिलोकीका राज भी कुछ नहीं ।
फीका है
इसके बिना
दुनियाँका वैभव सब,
सत और संयम पर
मुग्धा
जय लक्ष्मी
चरणोंकी दासी बन
गौरव मनाती है ।
विजयमाल डालती है ।
यदि तुम चाहते हो,
देशको बचाना तो
यह रतन खोना मत ।
नाली और गलियोंमें,
इसको गँवाना मत ।
रतन,
अनमोल यह,

शुद्ध तन, शुद्ध मन
इसका निवास है ।
आहार शुद्ध करो,
विहार शुद्ध करो,
तप और परीश्रमकी
सच्ची कमाईका
छोटा सा
छप्पर ही महलोंसे अच्छा है ।
यदि तुम चाहते हो,
सौ वर्ष जीना तो
पत्नी बनाओ तुम
सीता सावित्री सम
भारतीय नारीको,
सती और साध्वीको,
पृथ्वी सम क्षमाशील
गंगा सम पावन
सन्तोषी नारीको ।
हरिपद गामी ।
अनुरागी पति चरणोंकी,
ऐसी सुनारीको
पत्नी बनाओ तुम ।
फैसनकी तितलीसे
वासनाकी पुतलीसे
दूर रहो
बचकर चलो तुम ।
सोसायटी गर्ल्स
आज
सभ्यताकी मूर्ति बन,
छल और फरेबसे

सज्जित कर तन-मन को,
सड़कों पर फिरती हैं
कामना का कीचड़ उछालती हुई,
क्लबों में मिलती हैं
होटलों में मिलती हैं
जहर पिलाती हैं
नागिन बन डँसती हैं।
देश के सपूत को
विवेक शून्य करके,
तन, मन, धन का अपहरण करती हैं।

इनको—
दुतकार दो,
न माने इस पर तो
समाज के हित में
बहनों के हित में
उपेक्षा की ठोकर से
इनको कुचल दो।
वेहया—
बेशर्म ये,
फिर भी न माने तो
लक्ष्मण सम संयम से
नाक, कान काट लो,
इस पापिनी पिशाचिनी का
सूर्पणखा मानिनी का
देश यह राम का
लन्दन नहीं,
पेरिस नहीं,
स्वच्छन्द
उच्छृङ्खल
बेपर्द नारियाँ—
भारतीय समाज के
उनन्त भाल पर
श्वेत कुष्ठ हैं।
इनका वहिष्कार करो।
परन्तु—
घृणा न करना,
द्वेष न करना,
भटकी हुई
गुमराह
इन अबलाओं से,
ये भी तो अपनी ही बहने हैं।
कलि के प्रभाव से
शत्रु की चाल से
विदेशियों के जाल से
ये पथ-भ्रष्ट हुईं,
देवी से दानवी बन
करतीं विनाश ये
अपने हाथों से अपने ही भाई का,
अपने ही पति का।
नागिन बन अपने ही बच्चे को
खाती हैं।
इनको ठुकराओगे
फल प्रतिकूल होगा,
आग और भड़केगी,
वेश्यालय—
मदिरालय
होटल सब पनपेंगे।

(शेश पृ० ३७ में देखें)

देश के संकट काल में जन-गण के मनोबल एवं आत्मबल के सम्वर्धनार्थ प्रस्तुत है—

श्रीतीर्थ रामटेकड़ी, पूना, महाराष्ट्र के सिद्ध सन्त

श्री १०८ सद्गुरु बाबा शारदाराम जी उदासीन मुनिका

प्रसाद

राष्ट्र-हित-चिन्तन

शुभचिन्तक—आचार्य भद्रसेन वैद्य
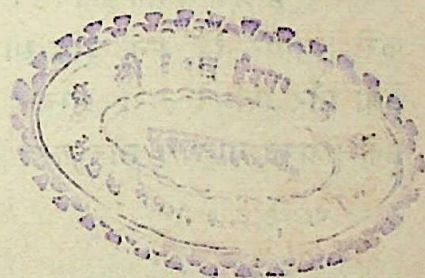
जागरण, युद्ध की बेला है वीर पुत्र आगे कदम बढ़ने दो ।
शंकर प्रलयंकर के खुल गये नेत्र आज काम दहन होने दो ।।
विश्व मनमोहन ने बाँसुरी को फेंक आज चक्रको उठाया है ।
शान्तिके उपासकने शान्ति स्थापन हित शस्त्रोंको मँगाया है ।।

राष्ट्र-हित-चिन्तन

प्रभु भक्ति

तुम्हारा सबसे बड़ा कर्तव्य यह है कि इस समस्त संसारके बनानेवाले परमात्माको कभी मत भूलो । अहर्निश प्रत्येक श्वाँस पर अथवा सायं-प्रातः उस सर्वशक्तिमानको किसी भी नामसे पुकारो और श्रद्धा-विश्वाससे एकनिष्ठ होकर प्रार्थना करो कि हे दयालु तुम ही इस समस्त ब्रह्माण्डके आदि कारण हो । हमारे इस देहको जो तुम तक पहुँचनेका अत्यन्त दुर्लभ साधन है उसकी रक्षा करो । जिस पावन भूमिमें यह देह निवास करता है उस देशको सुरक्षित रखो । हमारे अन्दर-बाहरके सभी शत्रुओंका नाश कर दैहिक-दैविक-भौतिक तापोंसे मुक्त करो । प्रारब्धवश प्राप्त दुखोंको सहनेकी शक्ति दो । सुखमें भी तेरा और अपने कर्तव्यका सदा ध्यान रहे ऐसा वरदान दो ।

हे प्रकाशमान सत-चित-आनन्द स्वरूप परमात्मा हमारी बुद्धिको सद्मार्ग पर प्रेरित करो । हमारे देह, मन, बुद्धि और देशमें इतना बल दो कि हम निर्भय होकर शान्तिपूर्वक सत्य, सेवा और संयमके द्वारा तुम्हारे साकार रूप समस्त चराचर प्राणियोंकी सेवा-साधना कर सकें । अपने बाहुबल और शस्त्र बलके प्रतापसे निर्बलोंकी रक्षा कर सकें ।

देश भक्ति

जिस देशकी मिट्टीसे यह शरीर बना है और जिस देशके अन्न-जलसे इस शरीरका पोषण हो रहा है उस देशके प्रति सच्ची निष्ठा ही देश भक्ति है । जिसकी जो वस्तु हो उसे समय पर वापस न दे देना ही द्रोह, अभिमान और मोह है ।

भारतमाताकी मिट्टीसे यह शरीर बना है । उसके अन्न-जलसे इसका भरण पोषण हो रहा है । अतः प्रत्येक भारतवासीका शरीर भारतमाताका है । उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है । भारतमाताकी स्वतन्त्रता खतरेमें है, माताके सम्मान पर शत्रुकी बुरी दृष्टि है । माता अपने पुत्रोंकी ओर निहार रही है । ऐसे संकट समयमें हमें अपना सब कुछ न्यौछावर कर देना चाहिये ।

प्रभु परमात्माकी कृपासे भारतमाता द्वारा प्राप्त इस तन, मन, धनको उसकी सेवामें अर्पण कर देना ही देश भक्ति है ।

देश भक्त ही धन्य हैं. देश भक्त ही अमर हैं। ऐसे देहाभिमान रहित वीर पुरुष ही इस चौरासी लाख योनियोंके चक्करसे मुक्त होकर परमात्माके परमानन्दमय धाममें निवास करते हैं।

देश द्रोह

दयालु परमात्माकी कृपासे भारतमाता द्वारा प्राप्त इस शरीर, धन, स्त्री, पुत्र, कुटुम्बमें अभिमान और मोह करके उसे वापस न लौटाना ही देशद्रोह है। ऐसा व्यक्ति अपराधी है, दण्डनीय है। जैसे कोई आदमी तुम्हें १००) रखनेके लिये देता है और अर्थ संकटके समय जब वह मागता है तब यदि तुम उसे १००) रुपये सूद और कृतज्ञतापूर्वक नहीं लौटाते हो तो यह लौकिक कानूनकी नजरसे भी अपराध है। इसी प्रकार देश द्वारा प्राप्त यह तन, मन, धन देशके संकटके समय न देंना देशद्रोह है, उसे अपना कहना अभिमान है और छुपाकर रखना मोह है। याद रखो देश द्रोह, अभिमान और मोहकी सजा बड़ी भयानक होती है।

निर्भय रहो

वीर सदा निर्भय रहते हैं और कायर सदा भयभीत रहते हैं। जानते हो ऐसा क्यों होता है ? सुनो, वीर ज्ञानी हैं और कायर अज्ञानी हैं। वीर परमात्माके अतिरिक्त और किसी को नहीं मानता, जानता। वह अपने शरीरको मिट्टीका ढेर जानता है और शरीरमें व्याप्त शक्तिको परमात्माकी अजर-अमर अविनाशी शक्ति मानता है। वीर अपना आपा खोकरके एक परमात्माका ही अस्तित्व स्वीकार करता है इसलिये वह निर्भय रहता है। भय वहीं होता है जहाँ दो का अस्तित्व स्वीकार किया जाय। अपनेसे अपनेको भय नहीं होता है। कायर अपने को परमात्मासे अलग देखता है। धन-वैभवका कर्ता अपनेको मानता है। प्रत्येक चीजोंसे मोह करता है और शरीरको ही अपनी आत्मा जानता है। और इन सबका नाश न हो जाय इसलिये भयभीत रहता है। नाशवान परायी वस्तुको अविनाशी और सदाके लिये अपनी बनानेके अज्ञानसे कायर सदा भयभीत रहता है।

युद्ध एक पवित्र पर्व है

दिवालीके पर्व पर सभी अपने-अपने घरोंकी सफाई करते हैं। अनावश्यक सामानोंको फेंककर उपयोगी मजबूत सामानोंको सजाकर रखते हैं। नये सामान खरीदते हैं, घरों की मरम्मत करते हैं। इसी प्रकार युद्ध भी पर्व है। इस पर्व पर देशकी सफाई होती है। कायरों, देश द्रोहियोंको शासनसे निकाल बाहर किया जाता है। वीरोंका स्वागत होता है। शक्ति

ग्रौर शस्त्रका संचय होता है। पूरे देशकी सफाई हो जानेसे वस्तुस्थिति सामने ग्रा जाती है। इसलिये युद्धसे डरनेवालेको कायर ग्रौर युद्धमें हानिके भयसे ग्रात्म-समर्पण करने वालेको दुर्बल कहा जाता है। ग्रौर इस समस्त संसार प्रपंचको स्वप्नवत ग्रसत्य मान कर देहाभिमानसे रहित होकर सदा शान्ति सद्भावना ग्रौर देश हितके लिये मरने मारनेको तैयार रहनेवालेको वीर कहते हैं। ऐसे वीर ही चक्रवर्ती राजा बनकर वसुन्धराका भोग करते हैं।

ग्रात्म संशोधन

युद्ध एक सफाई ग्रभियानके समान हैं। ग्रतः युद्धसे वही देश प्रभावित होते हैं जो ग्रन्दरसे ग्रधिक ग्रव्यस्थित, दुर्बल, विलासी ग्रौर व्यसनी होते हैं। जैसे स्वच्छ घर सफाई ग्रभियानसे विशेष प्रभावित नहीं होते वैसे ही ग्रन्दर बाहर स्वच्छ स्वस्थ देशपर युद्धका विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। ग्रतः ग्रात्म-संशोधन सदा करते रहना चाहिये।

शत्रुको न्यौता मत दो

ग्रपनी कमजोरियोंसे लापरवाह रहना ही शत्रुको न्यौता देना है। स्वतन्त्रता ग्रौर शान्तिके लिये सुरक्षा ग्रावश्यक है ग्रौर सुरक्षाके लिये हर प्रकारका बल-पुरुषार्थ ग्रपेक्षित है। कीमती वस्तुएँ इधर-उधर नहीं फेंकी जाती हैं। स्वतन्त्रता कितनी कीमती है इसे तो वही जान सकता है जिसने इसको पाने के लिये संघर्ष किया है। जिस प्रकार जर-जमीन-जोरूका संरक्षण, भोग ग्रौर पालन खेल नहीं वैसे ही देशकी स्वतंत्रताकी रक्षा ग्रासान नहीं है। तुम्हें हर क्षण जागरूक ग्रौर सावधान रहना चाहिए।

क्या कायर हो ?

पहले मेरे प्रश्नोंका उत्तर दो। तुम कायर हो ? ग्रथवा वीर हो ? यदि कायर हो तो मुझे केवल इतना ही कहना है कि वीर बनो ग्रौर यदि वीर न बन सको तो इस नाशवान शरीरको वीरोकी सेवामें खपा दो। यदि सच्ची सेवा बन पड़ी तो ग्रमर हो जाग्रोगे ग्रौर यदि कुछ कमी रह गई तो पुनः ग्रगले जन्ममें वीर माताके गर्भसे वीर पुत्रके रूपमें उत्पन्न होगे। यदि ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे इस विषयी शरीर परसे दुश्मनोंकी सेनाएँ गुजर जायेंगी। ग्रन्याय द्वारा संचित यह तुम्हारी तिजोरियाँ चोर लुटेरे उठा ले जायेगें। खूँखार नास्तिक सैनिक तुम्हारे ग्राँखोंके सामने ही तुम्हारे कुल परिवार बहू बेटियोंकी इज्जतके साथ खिलवाड़ करेंगे।

क्या ग्रपाहिज हो !

यदि तुम ग्रपनेको देश रक्षाके योग्य नहीं समझते हो, ग्रपनेको ग्रपाहिज, दुर्बल, वृद्ध

और रोगी मानते हो तो देशके इस संकट कालमें अमर होनेका तुम्हारे लिये बहुत सुन्दर अवसर है। आज ही अपना अन्न, धन, चल-अचल सम्पत्ति देशके नाम पर, भगवानके नाम पर उत्सर्ग कर दो! छोटे बच्चोंको भगवानके भरोसे छोड़ दो, समर्थ स्त्री-पुरुषोंको सेनामें भेज दो और स्वयं अपने जैसे अपाहिजोंको लेकर किसी एकान्त स्थानमें बैठकर देशकी विजयके लिए, वीरोंकी खुशहालीके लिये परमपिता परमात्मासे प्रार्थना करते हुए भूखे-प्यासे इस निकम्मे, भाररूप शरीरका त्याग कर दो।

यदि तुमने सचमुच सच्चे हृदय और शुद्ध मनसे देशके लिए एकाग्र होकर प्रार्थना की तो निश्चय ही मरनेके बाद तुम्हें आत्मारामका परमधाम प्राप्त होगा।

भगवान पर भरोसा नहीं ?

क्या कहा? "अपने बच्चों और कुल परिवारको भगवानके ऊपर कैसे छोड़ दूँ। मुझे उसपर भरोसा नहीं, मैं भगवानको नहीं मानता"। तुम्हारा ऐसा सोचना ही कायरताका बीज है। कायर पुरुष किसी पर विश्वास नहीं करता है। खैर भगवानके भरोसे मत छोड़ो लेकिन तुम उन्हें अपने भरोसे पर रखकर भी क्या कर सकोगे? जरा सोचो तो जब बम और एटम बम गिरेंगे तब तुम अपने उन बच्चोंकी रक्षा कैसे करोगे। बमके धमाकेसे ही जब तुम्हारे प्राण पखेरू उड़ने लगेंगे तब तुम किस पर भरोसा करोगे। तुम्हारे बच्चे और परिवार किसके भरोसे रहेंगे।

अहंकार

सबके हृदयमें आत्मारूपसे बसनेवाले परमात्माको न मानकर केवल भौतिक शक्तियों पर भरोसा करनेवाला अहंकारी पुरुष रावण और कौरवोंकी तरह पराजयको प्राप्त होता है। अतः शस्त्रबल, बाहुबल बुद्धिबलके साथ आत्मबल अत्यन्त आवश्यक है। जैसे बिजलीकी शक्ति के बिना शक्तिशाली मशीनें, प्रकाश देनेवाले वल्ब और बड़े-बड़े पंखे बेकार हैं उसी प्रकार आत्मबलके बिना शस्त्र, बाहु और बुद्धि सभी निष्क्रिय हैं। समस्त संसारको आत्माकी सतहसे ही शक्ति और चेतना प्राप्त होती है अतः अहंकारका त्याग और आत्मबलका प्राकट्य ही मानवको विश्वविजयी बनाता है।

उठो

यदि तुम वीर हो तो देर मत करो, उठो। वीरोंको सदा सावधान, शस्त्र सज्ज और मोह रहित रहना चाहिए। दुश्मन, मौत और रोग कहकर नहीं आते हैं। उठो, साधनाकी बेला आ गई है। मोह-अज्ञानकी रात्रि समाप्त हुई, देखो आकाश खूनसे लाल हो उठा है।

हिमालयके शुभ्र भालपर रक्तका टीका सुशोभित है। यही वीरोंका सुहाना प्रभात है। भव-सागरसे अनायास ही पार होनेकी शुभबेला है। जिस पदको लोग अनेकों पुण्योंके द्वारा प्राप्त करते हैं।

उस परमानन्दमय पदको इस समय वीर पुरुष क्षणमात्रमें ही प्राप्तकर लेते हैं। जो अन्तः करण वर्षोंकी साधनासे शुद्ध नहीं होता, जो मन जन्म जन्मान्तरके जपसे एकाग्र नहीं होता, जो वैराग्य वर्षों सत्संगसे नहीं होता वह युद्ध क्षेत्रमें वीरोंको अनायास ही प्राप्त हो जाता है। ऐसे समयमें वीर पुरुष बैठे नहीं रह सकते। उठो वीर पुत्र ! अपनेको कृत कृत्य करो। भगवान कृष्ण तुम्हें गीता सुनानेके लिए युद्ध क्षेत्रमें बुला रहे हैं।

जागो

उठो कहकर जागो कहा, यह बात तुम्हें ध्यानसे समझ लेनी चाहिए। उठोका अर्थ है युद्धके लिये तैयार हो जाना। और जागोका अर्थ है होशमें रहना। विवेक पूर्वक तुम्हें अपने कर्तव्य और लक्ष्यको जानना चाहिए। जोशमें होश खो देना भी दुर्बलताका लक्षण है। अतः तुम्हें धीर-वीर बनना है। जैसे निपुण सैनिक गोली चलाते समय अपना ध्यान निशानेकी ओर एकाग्र रखता है। तभी वह लक्ष्य वेधमें सफल होता है। लक्ष्यहीन अविवेकी सिपाहीका वार खाली जाता है। इसलिये बदहोशीमें किया गया युद्ध अथवा श्रम निष्प्रयोजन और हानिप्रद है।

लक्ष्य पहचानो

लक्ष्य पहचाचनेके लिये तुम्हें विवेकी बनना चाहिए। दिल दिमागको स्वस्थ और शुद्ध रखना चाहिये। तभी तुम अपने हर प्रकारके शत्रुओंको पहचान सकोगे। धीरतापूर्वक प्रत्येक कार्यको विचारकर करना चाहिए। संकट कालमें वीरोंका प्रधान लक्ष्य अन्दर बाहरके शत्रुओंका नाश ही होता है।

शत्रु कौन, कहाँ है ?

शत्रु चार प्रकारके होते हैं—१–शरीरका भीतरी शत्रु २–शरीरका बाहरी शत्रु ३–देशका भीतरी शत्रु ४–देशका बाहरी शत्रु।

शरीरका भीतरी शत्रु

तुम्हारे शरीरके भीतर भी एक शत्रुओंकी फौज रहती है। इन पर तुम्हें सर्वप्रथम ध्यान देना चाहिये। यदि इनको विजय कर परास्त किए बिना ही आगे बढ़ोगे तो देशके प्रति तुम अपना कर्तव्य नहीं निभा सकते। क्योंकि इनके सूक्ष्म सैनिक गुप्त मार्गसे आकर तुम्हें

निर्बल और कायर बना देंगे। वैसे ही जैसे कपटी चीनियोंके सैनिक गुप्त मार्ग और छद्म वेषमें एकाएक प्रकट होकर नेफामें भारतीय सैनिकोंको निष्क्रिय कर दिये थे।

अतः इन शत्रुओंसे सावधान रहो। इनका परिचय बतला देता हूँ। सुनो—अज्ञान राजा है, अविद्या रानी है, अहंकार युवराज है, दूषित बुद्धि मंत्री है। तामसी काला मन और चंचल चित्त सेनापति हैं। काम क्रोध मोह लोभ ईर्ष्या द्वेष आदि ये अज्ञानके भयानक अस्त्र हैं। इन्द्रियाँ टैंक तथा रथ हैं। विषय और भोग उनके सैनिक हैं। इस अज्ञानकी सेनाको पराजित किये बिना सच्ची देश भक्ति नहीं हो सकती।

जिस देशके निवासियों पर उपर्युक्त शत्रुओंका प्रभाव रहता है वे बाहरसे भले ही अपनेको वीर बलवान घोषित करें। परन्तु उनमें आत्मबलका अभाव रहता है। ऐसे ही लोगोंका जोश और साहस ऐन मौकेपर धोखा दे जाता है। अज्ञानकी सेना बड़ी प्रबल है इसकी उपेक्षा कभी नहीं करनी चाहिये। गाण्डीवधारी वीर अर्जुनको भी युद्ध क्षेत्रमें बड़े विकट क्षणमें इस अज्ञानकी सेनाने पराजित कर दिया था। यदि भगवान् कृष्णने अर्जुनको गीता सुनाकर न सम्हाला होता तो पाण्डवोंसे विजयश्री कोसों दूर थी।

भीतरके शत्रुकी पराजय

आत्मघाती अज्ञानकी सेनाको पराजित करनेका ढंग भी सुन लो। परब्रह्म परमात्माके शरणागत होकर श्रद्धा, भक्ति, अनुनय, विनय द्वारा एकमात्र उनका संबल ग्रहण करनेसे वे स्वयं किसी भी शरीरमें ज्ञानरूपसे प्रकट होकर अज्ञानका नाश करते हैं। दूसरा तरीका पुरुषार्थका है। तप-कठिन परीश्रम द्वारा देश धर्मके प्रति अपने कर्तव्यको निभाना, त्याग—संचित वस्तुओं और धन सम्पत्तिको देश रक्षाके लिये दान कर देना तथा सन्तोषसे अज्ञानकी समस्त सेना विषय-भोग आदिका नाश किया जा सकता है। आत्म संयम शासन और ब्रह्मचर्य द्वारा शरीरको बलवान बनाकर इन्द्रिय रूपी टैंक और रथका नाश किया जा सकता है। शुद्ध अन्नका सेवन, शुद्ध आहार विहार, वैराग्य, यम नियमका अभ्यास तथा अनुशासन पालनके द्वारा मनको जीता जा सकता है। सद्ग्रन्थोंका स्वाध्याय, सत्संग और सेवा द्वारा बुद्धिको अनुकूल किया जा सकता है। इतना पुरुषार्थ करनेपर मनुष्यको दैवी संपत्ति प्राप्त हो जाती है। उसका देहाभिमान नष्ट हो जाता है। अविद्याका प्राणान्त हो जाता है। मनुष्य सर्वत्र प्रत्येक प्राणीमें नारायणका ही दर्शन करने लगता है। सारे देशकी आत्माको अपनी आत्मा समझने लगता है। देशके लिये अपना शरीर रूप वस्त्र न्यौछावर करनेके लिये उद्यत हो जाता है। ऐसे सर्वोत्तम भाव वाले सिपाहीमें अज्ञान नहीं रहता है। और अज्ञान नहीं तो अज्ञानकी सेना भी नहीं। वहाँ तो केवल ज्ञानस्वरूप घट-घटमें व्यापक परमात्माका ही निवास रहता

है। वह धीर वीर कैसी भी परिस्थितिमें मोहित नहीं होता, घबड़ाता नहीं है। उसपर नाशवान मायाका प्रभाव नहीं पड़ता।

काश, परमात्माकी कृपासे हमारे भारत देशके निवासी और सैनिक आत्मघाती अज्ञानकी सेनाको पराजित करनेमें समर्थ हो जाँय तो भारत पुनः विश्व विजयी जगद्गुरु चक्रवर्ती राज्य हो सकता है। सूर्यवंश और चन्द्रवंशमें अनेकों ब्रह्मज्ञानी चक्रवर्ती राजा हो चुके हैं। भारत के लिए यह कोई असम्भव नहीं, यह तो उसका उत्तराधिकार है। आवश्यकता केवल उसको सम्हालने योग्य अधिकारी बनने बनाने की है।

शरीर का बाहरी शत्रु

परमात्मा तक पहुँचनेका दुर्लभ साधन, जिसपर सवार होकर यह जीव परमानन्दमय परमधामको जाता है, उस शरीरको किसी प्रकारसे क्षति पहुँचाने वालेको शरीरका बाहरी शत्रु कहते हैं। जैसे शरीरको निर्बल करनेवाले रोग-व्याधा आदि, तामसी वृत्ति वाला पड़ोसी जो तुम्हारा अहित कर अपना स्वार्थ साधना चाहता है, चोर डाँकू जो तुम्हारी सम्पत्ति छीन कर सम्पन्न होना चाहता है। इन नजदीकी शत्रुओं द्वारा पराजित होकर तुम देशके सच्चे प्रहरी नहीं बन सकते हो। इसलिए इन शत्रुओंको भयभीत रखकर तुम्हें उनका मान मर्दन करना चाहिए।

शरीर के बाहरी शत्रु का मान मर्दन

कोई भी शत्रु बातोंसे नहीं मानता है। अधिक बातचीत करनेवालेको शत्रु दुर्बल समझता है। बात भी सही है। धीर-वीर बातें कम करते हैं। अतः बाहरी शत्रुका मान मर्दनके लिए परम आवश्यक हैं कि आहार-विहार शुद्ध, संयमित और नियमित रखो। शरीर को अधिकसे अधिक बलवान बनानेके लिए जितना उचित हो उतना पौष्टिक भोजन करो। जिह्वाको वशमें रखो। इससे रोग नहीं आयेंगे। सदाचार और ब्रह्मचर्यका पालन करो। संयमसे उचित मात्रामें विषयोंका आसक्ति रहित होकर देश-धर्म और मानव जातिकी सम्वृद्धि के लिए भोग करो। अनुशासन और गुरुजनोंकी आज्ञा पालन करो। सरकार और समाजकी मर्यादाका पालन करो। परीश्रमका जीवन अपनाओ। गाँव-गाँवमें व्यायामशाला बनाओ। इससे शरीर बलवान रहेगा। भयवश दुष्ट पड़ोसी तुम्हारा आदर करेंगे। देश कालके अनुरूप प्रचलित शस्त्रोंके संचालनका शिक्षण प्राप्त करो। यथाशक्ति शस्त्रोंका संग्रह करो। अपनी इस शक्तिका प्रयोग केवल दुखियोंकी रक्षा, अपने शरीर और परिवारकी रक्षा, अपने देश धर्मकी रक्षाके लिए ही करो। सावधान रहो! यदि इस शक्तिका स्वार्थ, लोभ और तृष्णाके कारण अपने भीतरके शत्रुओंके प्रभावमें आकर दुरुपयोग करोगे तो याद रखो सर्वज्ञ परमात्मा

अपनी दी हुई शक्तिको वापस भी ले सकता है। प्राचीन इतिहासोंमें इसके प्रमाण भरे पड़े हैं। भस्मासुरको शक्तिका बरदान देने वाला ही युक्तिसे उसे वापस भी ले सकता है। ध्यान रखो, शक्ति सदा उसके पास रहती है जो उसका सदुपयोग करता है। अतः मनोरंजन और विलासमें बीतने वाले समय और खर्च होनेवाले धनसे बाहुबल और शस्त्रबलका संग्रह करो। शरीरके बाहरी शत्रु तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकते हैं।

देश के भीतरी शत्रु

गुप्त रूपसे देशको हानि पहुँचाने वाले देश वासियोंको भीतरी शत्रु कहते हैं। ये ऊपर से देश भक्त दीखते हैं परन्तु अन्तरमें देश द्रोह करते हैं। ऐसे शत्रु अनेक प्रकारके होते हैं। जिन्हें देशद्रोही कहा जा सकता है। कुछ तो जानबूझ कर देश द्रोह करते हैं और कुछ अन-जानमें ही देश द्रोह करते हैं। जिस देशकी भूमि जिसे अन्न जल देती है वह उस खाने वाले व्यक्ति की आत्मा होती है। इसलिए देशको देश वासियोंकी आत्मा कहा जाता है। देशके साथ द्रोह आत्माके साथ द्रोह है। और आत्म द्रोह सबसे बड़ा पाप है। आत्म द्रोहीको कभी क्षमा नहीं किया जा सकता।

देशके भीतरी शत्रु बहुधा कम अक्ल लोग होते हैं। जो थोड़ेसे स्वार्थके लिए देशकी बहुत बड़ी हानि कर बैठते हैं। इन्हें साम-दाम-दण्ड-भेदके द्वारा अनुकूल करना चाहिए। और तुरत इनकी देशके रक्षा विभागको सूचना देनी चाहिए। देशमें छुपे हुए देश द्रोहियोंको छुपाना सबसे बड़ा पाप है।

विदेशी शत्रुके जासूस छद्मवेषमें फिरा करते हैं। उनका पता लगाकर तुरन्त रक्षा विभागको सूचित करना चाहिए।

देश द्रोही अपना आत्मीय भाई सम्बन्धी ही क्यों न हो उसकी खबर रक्षा विभागको तुरन्त देना उच्चकोटिकी देशभक्ति है।

मानसिक गुलामी भी देशद्रोह है

अन्न जल भारतका खाना और गीत गैरोंके गाना यह मानसिक गुलामी है। अपने घरकी, अपने देशकी, अपने धर्म संस्कृतिकी निन्दा और विदेशियोंकी प्रशंसा यह मानसिक गुलामी है।

मानसिक गुलामी मन्द विष है

मानसिक गुलामी प्रत्यक्ष हानिप्रद नहीं मालूम पड़ती है। परन्तु अप्रत्यक्ष रूपसे यह स्वतन्त्रताके लिये घातक है। क्योंकि यह नहीं कहा जा सकता कि कौन देश कब हमारा मित्र है और कब शत्रु है। जो व्यक्ति जिस देशका मानसिक गुलाम होता है उस देशकी भेषभूषा

रहन-सहन शिक्षा संस्कृतिको श्रेष्ठ समझता है। और दैव विपाकसे जब वही देश अपना शत्रु हो जाता है तब उस मानसिक गुलामका अन्तरमन स्वभावतः शत्रुकी ओर झुकता है। और वह व्यक्ति देश के सम्मान और स्वतन्त्रताके मूल्यको नहीं समझता है। ऐसे ही लोग शत्रुके जासूसों द्वारा बर्गलाये जाते हैं। अतः स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिये मानसिक गुलामीको छोड़ना अत्यन्त आवश्यक है।

मानसिक स्वतन्त्रता

मानसिक स्वतन्त्रता देशभक्तोंका प्रधान गुण है। अपना घर जैसा भी हो, अपना देश जैसा भी हो उसीको सर्वश्रेष्ठ प्राणोंसे प्यारा मानकर जो कुछ भी मिल जाय उसीको खा-पहनकर आनन्द मनाते हुए परमात्माको धन्यवाद देना और नित्य ही उन्नतिके लिये कठिन परीश्रम करना, कम साधन है तो कममें ही काम चलाना, अपने देश, काल, परम्परा, संस्कृतिके अनुसार आहार-विहार, बेष-भूषा रखना, शिक्षा साहित्य और विज्ञानको अपने देशकालके अनुसार मौलिक रूपमें स्वीकार करना यह मानसिक स्वतन्त्रता है।

मानसिक स्वतन्त्रताकी रक्षा

मानसिक स्वतन्त्रता उसीकी सुरक्षित रह सकती है जो शक्तिमें सम्पन्न और विलासिताके साधनोंमें दरिद्र हो। भोग विलासमें मितव्ययी होना चाहिए सभी खर्चोंको रोककर युगधर्म देश कालके अनुसार ऊँचेसे ऊँचे शस्त्र अधिकसे अधिक सेना रखना चाहिये।

विदेशोंकी विलासिताका अनुकरण न कर उनकी बहादुरी, परीश्रम, वैज्ञानिक उन्नतिको यथाशक्ति अपने अनुसार बनाकर हजम कर लिया जाय।

आवश्यक होने पर अच्छी चीजें दूसरोंसे अवश्य लीजिए परन्तु उसपर लेबल अपना लगाइये। इससे अपने और देशके प्रति स्वाभिमान बढ़ेगा। मानसिक स्वतन्त्रता सुरक्षित रहेगी।

देशका बाहरी शत्रु

हमारी मातृभूमिको किसी प्रकारकी हानि पहुँचानेवाला देश हमारा बाहरी शत्रु है। हमारी भूमिको अपनी भूमि कहकर बलात हरणकर अशान्ति फैलानेवाला शत्रु राक्षस है। बाहुबल, बुद्धिबल, शस्त्रबल और आत्मबलके द्वारा शीघ्रातिशीघ्र ऐसे शत्रुओंका नाश कर देना चाहिये।

अधर्मका नाश हो

हमें दृढ़ प्रतिज्ञ होना चाहिये कि अपनी अथाह शक्ति और सेनाका प्रयोग केवल धर्म स्थापन

और अधर्मके नाशके लिये ही होना। शक्तिरूप स्वयं भगवान हैं। मनुष्य तो जड़ है। जो देश धर्म, न्याय और सद्भावनाके लिये युद्ध करता है उसका साथ भगवान स्वयं देते हैं उसे शक्तिकी कमी नहीं रहती। अतः शक्ति पाकर जो लोग अधर्मकी ओर प्रवृत्त होते हैं उनका शीघ्र नाश हो जाता हैं।

शत्रुका नाश हो

अपने घरका एक एक सामान लोटा-थाली तक बेचकर हमें शत्रुसे लोहा लेना है, भूखों रहकर भी देशसे शत्रुको बाहर भगाना है। मारो और मरो बस यही एक नारा है। मारोगे विजय मिलेगी और मरोगे स्वर्ग मिलेगा। दोनों हाथमें लड्डू है। यदि निष्काम भावसे देहको कपड़ा और आत्माको अजर अमर समझकर शत्रुओंपर टूट पड़ो तो मरने पर मोक्ष प्राप्त होगा। भगवान कृष्ण कहते हैं कि मेरी आज्ञाको माननेवाला मनुष्य नहीं देवता है वह मेरा परमप्रिय है।

शत्रु भय से भागता है

अपने पास इतनी अधिक शक्तिका संग्रह करो कि शत्रु तुम्हें देखते ही भाग जाय अथवा आत्मसमर्पण कर दे। बलवान शक्तिमान देशको शत्रुका भय नहीं रहता है।

धर्म पर चलो

विश्वको दहलानेवाली भौतिक, आत्मिक शक्तिका संग्रह कर लेनेके बाद देशकी बागडोर सात्विक विचारोंवाले धार्मिक राजाके हाथमें होनी चाहिए जैसे पृथु, अम्बरीष, रघु, रामचन्द्र, जनक आदि। क्योंकि इस शक्तिका उपयोग शान्ति, सद्भावना, दीन दुःखियोंकी रक्षा, विद्वान साधु सन्तोंकी रक्षा, गोधन एवं देशकी रक्षा धर्मको स्थापना और अधर्मके नाशके लिये होना चाहिये। राजा और प्रजा दोनोंको सदा शुभ कर्मोंको करते हुए धर्मपर चलना चाहिए।

मर्यादा

शक्ति आनेपर मर्यादा भंग मत करो, अन्यथा शक्ति समाप्त हो जायगी। समाज, धर्म, मानवता और शासनके बन्धनकी उपेक्षा मत करो। यह शक्तिमान लोगोंके लिये ब्रेकके समान उपयोगी है। जैसे मन्द गतिसे चलनेवाली बैलगाड़ीको ब्रेककी जरूरत नहीं पड़ती परन्तु अधिक तेज चलनेवाली मोटर आदि सवारियोंको सुरक्षाके लिये ब्रेक अत्यन्त आवश्यक है। इसी प्रकार सबल सम्पन्न और उन्नत देशके राजा और प्रजा दोनोंके लिये सामाजिक धार्मिक और नैतिक मर्यादाओंका रहना ब्रेकके समान अत्यन्त आवश्यक है। यदि इन

मर्यादाओं (ब्रेक) का उलंघन और उपेक्षा की जायगी तो कितना भी चतुर चालक क्यों न हो ब्रेक विहीन गाड़ीकी तरह देशको गाड़ी उसके काबूसे बाहर हो जायगी। और उसका अन्त वही होगा जो रावण और कौरवोंका हुआ। क्योंकि बाहुबल, भौतिकबल, शस्त्रबल, विज्ञानबल और बुद्धिबलमें सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी रावण और कौरवोंका एकमात्र दोष यही था कि उन्होंने शान्ति, सद्भावना, सत्य, अहिंसा तथा मानवताके मर्यादाकी उपेक्षा की थी। परमात्माकी कृपासे, सद्कर्मोंके अनुष्ठानसे प्राप्त शक्तिके अहंकारमें भूलकर धर्म, दया, क्षमा और सर्वात्मभावके सद्मार्गसे हट जाना ही उनके विनाशका कारण था। अतः हमें शक्ति संग्रहके साथ ही अपने अतीतसे शिक्षा ग्रहण करते हुए सुधर्मका सम्पादन करते रहना चाहिये। देश-धर्म और मानव जातिके हितके लिये, विश्व शान्ति सद्भावना और सुव्यवस्थाके लिये, देश रक्षाके लिये मर्यादारूपी ब्रेकको सावधानी पूर्वक पकड़े रहना चाहिये। तभी हमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज कृष्णकी कृपा तथा विश्वके जनमतका पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

यह परीक्षा काल है

संकट कालमें घबड़ाना नहीं चाहिए। मनोबल और आत्मबलको तप त्याग और नाम जपसे उन्नत करना चाहिए। आपत्ति भगवानकी कृपासे हमारी परीक्षाके लिए आती है। "आपद काल परीखहु चारी, धीरज धर्म मित्र अरु नारी।" अतः ऐसे ही समयमें हमारे धीरज और धर्मकी परीक्षा होती है। ठीक ही तो हैं चतुर चालक गाड़ी चलानेके पहले उसकी शक्ति और ब्रेककी परीक्षा कर लेता है। संकट कालमें ही मित्र और सहधर्मिणी नारीकी भी परीक्षा होती है। सुख शान्तिमें तो सभी मित्र हैं। परन्तु सच्चा मित्र वही है जो दुःख संकटमें साथ दे।

हिंसा

यदि तुम हिंसा और अहिंसाका सही अर्थ समझ लो तो देशकी स्वतन्त्रता सदाके लिए सुरक्षित हो सकती है।

हिंसा पाप है, किसी भी जीवको मन, वचन; कर्मसे दुःख देना हिंसा कहलाता है।

परन्तु शान्ति, सद्भावना, धर्म और मर्यायाको रक्षाके लिये शासन द्वारा समस्त लोकको मार डालने पर भी पाप नहीं लगता है। यह अहिंसा है।

अहिंसा एक व्रत है।

शास्त्रोंने शक्तिशाली राष्ट्रों और बलवान प्रजाजनोंको अहिंसा व्रत पालन करनेका उपदेश दिया है। जैसे उपवास व्रत है वैसे ही अहिंसा भी व्रत है। जैसे बहुत दिनोंके भूखे

आदमीके लिए उपवास व्रत व्यर्थ है उसी प्रकार निर्बल आदमीके लिए अहिंसाव्रत कोई मूल्य नहीं रखता है। अतः उपवास व्रत नित्य खाने-पीने वाला स्वस्थ आदमी ही करता है वैसे ही अहिंसा व्रत भी शक्तिशाली बलवान आदमी ही कर सकता है। सिद्ध हुआ कि अहिंसाव्रतका सही मानेमें पालन करनेके लिए अन्दरसे हमें काफी बलवान शस्त्रबल और सैन्यबलसे सम्पन्न होना चाहिये। जैसे नर भक्षी शेर चीता भेड़िया आदि हिंसक शरीरोंको मारना हिंसा नहीं वैसे ही अत्याचारी अन्यायी राक्षस शत्रुओंके शरीरको मारना हिंसा नहीं है।

अहिंसा व्रत बलवानोंके लिए

निर्बल और शस्त्र रहित व्यक्ति जो मच्छड़ और मक्खियोंसे भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता उससे यह कहना कि अहिंसा व्रत पालन करो किसी को मत मारो कोई अर्थ नहीं रखता। अहिंसा व्रतका पालन वीरों को ही शोभा देता है।

वीर बनो रणधीर बनो

सत्य-अहिंसा भारतका मूलमंत्र है। इसी मंत्रके द्वारा गान्धीजीने स्वतन्त्रता प्राप्तकी थी। अहिंसाका यह अर्थ नहीं कि हम शस्त्रबल सैन्यबलका संग्रह न करें। परन्तु अहिंसा-व्रत प्रत्यक्ष विधान करता है कि पहले वीर-धीर बनो अणु और राकेट अस्त्रोंका संग्रह करो तभी तुम्हें अहिंसा व्रतका पालन शोभा देगा। तभी यह कहना भी सार्थक सिद्ध होगा कि किसी जीव की हिन्सा न करनेका व्रत ले लो।

अहिंसा वीरों का भूषण है

जिस शक्तिशाली देशमें अहिंसा व्रतका पालन होता है उस देशमें धन-धर्म और आत्मबलकी वृद्धि होती है। भगवानकी कृपा वृष्टि होती है। अहिंसाका उपदेश कायरोंके लिए नहीं बल्कि यह तो वीरोंका भूषण हैं। और हिंसा दूषण हैं।

अहिंसक कायर नहीं होता

अहिंसाके उपासक को अज्ञानी लोग कायर समझते हैं। गान्धीजीने अंग्रेजोंसे कहा—हम शान्ति और स्वतन्त्रताके लिए अहिंसा व्रतका पालन करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं था कि गांधी जीके पास शक्ति नहीं थी। जिस दिन अंग्रेज अपनी भूल समझ गये कि अहिंसक गांधीके पास अटूट जनबल और आत्मबलकी आंधी भरी पड़ी है उसी समय वे भयभीत होकर सात समुन्दर पार चले गये।

अहिंसा का लाभ

अहिंसा व्रतका सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि अपने जन बलकी क्षति नहीं होती

श्रौर धीरे धीरे दिन प्रतिदिन उसमें वृद्धि होती जाती है। जैसे उपवास व्रतसे शरीर घटता नहीं बल्कि उसके विकार श्रौर दोष घट जाते हैं, शरीर स्वस्थ निरोग श्रौर श्रात्मबलकी वृद्धि होती है। उसी प्रकार श्रहिंसाव्रत भी शक्ति सम्पन्न देशका शोधन श्रौर संवर्धन करके दैवीबलकी वृद्धि करता है।

श्रहिंसक बनो

श्रहिंसक बननेके लिये सबसे पहले हमें श्रपनी सभी श्रावश्यकताश्रोंको कम करके जैसे भी हो शारीरिक, मानसिक, श्रात्मिक, भौतिक, शस्त्रबल, दैवबल, सैन्यबल, विज्ञानबल, मायाबल, नीतिबल, चमत्कारबल, विद्याबल, ज्ञानबल, श्रात्मज्ञानबल श्रौर सर्वात्मभावकी श्रथाहवृद्धि करनी चाहिये। इतना प्राप्त कर लेनेके बाद शान्ति, सद्भावना श्रौर धर्म, देश मानवजातिकी रक्षाके लिये श्रहिंसा श्रौर हिंसाव्रतका विवेकपूर्वक पालन करना चाहिए।

सरकारको मत कोसो

दुःखकी घड़ीमें सरकारको कोसना भूल है। दुःख-सुख श्रपने कर्मानुसार प्रारब्धसे मिलता है। सुखके समय खुशीके मारे श्रापा खोकर विलासितामें मत डूब जाश्रो। श्रपने सुखको बाँटकर भोगो। सुखके क्षणोंमें दूसरे दुःखी लोगोंका मार्ग दर्शन करो। श्रौर दुःखके समय सरकारको श्रथवा श्रन्य किसीको कोसना, गाली देना, दोषी ठहराना छोड़कर श्रपनी गलतियोंको ढूढ़ों। श्रपने कर्मों पर ध्यान दो। चैतन्य होकर शुभ कर्मोंका, सत्य, दया, क्षमा, शील, सन्तोष का पालन करो।

कृतघ्न मत बनो

सुख-शान्ति पर संकट बहुधा तुम्हारी कृतघ्नतासे ही श्राते हैं। मान लो यदि कोई व्यक्ति तुम पर कृपाकर श्रत्यन्त उपयोगी एक बिजलीकी मशीन देता है। श्रौर उसके इस्तेमाल का ढंग कई बार स्वयं करके समझा देता है। यदि तुम उसके निर्देश श्रौर तौर तरीकेकी उपेक्षा कर मनमानी ढंगसे उस मशीनका उपयोग करो श्रौर जब कोई दुर्घटना उस मशीनके दुर्व्यवहारसे हो जाय तो इसमें किसका दोष है। मशीन देनेवालेका श्रथवा उसका उपयोग करनेवाले का। दुर्घटना होने पर भी यदि मशीन देनेवालेके श्रादेशोंको हम न माने उसके मार्ग पर न चलें तो इसे प्रमाद पूर्ण कृतघ्नता ही कहेंगे।

स्वतन्त्रता खतरेमें क्यों ?

यह भी हमारे कर्मोंका फल है। श्रपना खून देकर स्वतन्त्रता दिलानेवालेके प्रति हम कृतघ्न हैं। गांधीके प्रति हम कृतघ्न हैं। नगोटी लगाये तपस्वी नग्न महात्माकी तरह पवित्र

स्वतन्त्रताको स्वच्छन्दताकी कोट और लोभका फतलून पहनाकर हमने अपना लिया परन्तु स्वतन्त्रताके दाता गाँधीके आदेश और उनके आचार-विचार व्यवहारको नहीं अपनाया। गाँधी के सत्य, अहिंसा, संयमकी गोदमें 'रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम' की लोरी सुनकर जन्म लेनेवाली स्वतन्त्रताको हमने विलासिताके पालनेमें सुलाकर अश्लील फिल्मी गाने सुना-सुनाकर रोगी बना दिया है। यही कारण है कि देशकी स्वतन्त्रता आज खतरेमें हैं।

समयके पहले ही हम चेत गये

प्रसन्नताकी बात है कि आज भारत देशकी जनता स्वतन्त्रता दुलारीके प्राण निकलने के पहले ही चेत गई है, जाग उठी है। अब भी यदि हम अपनी गलतियोंको सुधार लें तो कुछ भी नहीं बिगड़ा है। स्वतन्त्रताकी कीमतको अच्छी प्रकार समझने वाले वीर सेनानी श्री जवाहरलाल नेहरूने विलासिताके कारण रुग्ण देशकी जनताको एक ऐसा इन्जेक्शन दिया है कि सारे देशमें वीर रसकी लहर फैल गई है, नशें फड़क उठी हैं।

आज बूढ़ा भी जवान हो गया

ऋषि मुनियोंके देशमें कुछ ऐसा चमत्कार हुआ है कि देशका बच्चा-बच्चा हिमालय पर खूनकी होली खेलनेके लिये हाथमें बन्दूक लेकर तैयार है। कुछ मौसम ही ऐसा बदल गया है कि बुड्ढे भी अपनेको नहीं सम्हाल पा रहे हैं।

बूढ़े ने बढ़के देश पर अपना बुढ़ापा दे दिया।
आयेगी काम कब कहो चढ़ती हुई जवानियाँ॥

आज गंगा उल्टी बह रही है

सचमुच भारतकी नदियाँ जो हिमालयसे दक्षिणकी ओर बह रहीं थीं आज वे दक्षिणसे उत्तरकी ओर बह रही हैं। परन्तु अन्तर यह है कि उत्तरसे दक्षिण-पूर्व बहने वाली नदियाँ पानी और सन्देश लेकर बह रहीं है और दक्षिणसे उत्तर बहने वाली नदियोंमें जवानों के खून, सोना, गोली, बारूद और बन्दूकें बह रही हैं।

सीता हरण हो चुका है

कपटी रावणने पंचशील साधुका वेष बनाकर स्वन्त्रता रूपी पंचवटीसे भारतकी शान्ति रूपी सीताका हरण किया है। अब शान्तिको वापस लानेके लिये रावणका बध आवश्यक है। मित्रोंकी मदद लेकर भारतने सीता शान्तिके लुटेरेकी खोज प्रारम्भ कर दी है। बालि बध हो चुका, वीर हनुमान श्री चह्वाणने रावणके बल और शान्ति सीताका पता लगा लिया है।

रावण की लंका कहाँ

त्रेतायुगके रावणकी लंका हिमालयके दक्षिणमें थी। परन्तु कलियुगका रावण हिमालयके उत्तरमें रहता है। इसी ने भारतकी सीताका हरण किया है।

पुल कहाँ बँधेगा

रामने नामके प्रतापसे समुद्रमें पत्थरको तराकर पुल बाँधा था और भालु-बन्दरोंकी सेनाको लंकामें उतारा था। उस समय मार्गमें समुद्र था और आज मार्गमें हिमालय है। रामने कभी युद्ध नहीं चाहा था परन्तु शान्तिकी रक्षाके लिये सदा दुष्टोंको दण्ड दिये हैं। आज हम भी युद्ध नहीं चाहते हैं। यदि कलियुगी रावणने समझौता वार्ता द्वारा शान्ति सीता को वापस नहीं किया तो नेहरु और चौहान जन-बल, धन-बल, शस्त्रबल, नामबलके प्रतापसे हिमालय पर हवाई जहाजोंको सीढ़ियाँ लगाकर अपनी सेनाको उत्तरी लंकामें उतार देंगे। और रावणका मान मर्दन कर शान्तिरूपी सीताको वापस लायेंगे।

गाँधी की एक बात मान लो तो भारत की आँधी से शत्रु उड़ जायगा

स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिये एक बहुत सुन्दर और सस्ता नुक्सा है। वह यह कि सन्तों की वेद, शास्त्रोंकी आज्ञाको मान लो। भगवानके चरणोंमें अपने को डाल दो।

यदि यह भी न कर सको तो स्वतन्त्रता दिलाने वाले देशी सिपाही गाँधीके जीवनको अपने में ढाल लो। भारत यह फिरसे सोनेकी चिड़िया हो जायगा। हिमालय पर शंकर डमरू त्रिशूल लेकर, समुद्रमें विष्णु चक्रगदा लेकर रात दिन पहरा देंगे। फिर सुख शान्तिसे चैनकी वंशी बजाना तुम।

गांधीकी बातें याद दिलाता हूँ

इन बातोंको ध्यानसे पढ़ो, सुनो, गुनो और अपनाओ, सुख चरणोंमें लोटेगा। गैर पुरुषोंको आदर्श न बनाकर अपने ही महापुरुषोंको जीवनका आदर्श बनाओ।

गान्धी ने कहा—"सत्य बोलो"

सत्यमें परमात्माका निवास है। सत्यकी कभी पराजय नहीं होती। सच्चा आदमी सर्वशक्तिमान होता है। सच्चा आदमी कभी धोखा नहीं खाता। जैसे प्रकाश अन्धकारसे नहीं ढका जा सकता वैसे ही सच्चे वीरका झूठा शत्रु बाल भी बाँका नहीं कर सकता। सच्चेके साथी परमात्मा है। सत्यवादी पुरुषकी वाणी मन्त्रके समान प्रभावशाली हो जाती है। सत्य बोलने से सबसे बड़ा लाभ यह है कि याद रखनेकी जरूरत नहीं पड़ती कि हमने क्या कहा।

सत्य बोलनेका आर्थिक दृष्टिकोणसे आज सबसे बड़ा लाभ यह है कि कब हमने क्या कहा है, इस समय क्या कहना चाहिये, इन सब बातोंका लेखा जोखा रखनेके लिए करोड़ों रुपये कागज, यन्त्र, स्याही और क्लर्कों पर जो खर्च होता है वह खर्च बच जायेगा। और उस धन और जनको देशकी सुरक्षाके लिए व्यय किया जा सकता।

तुमने क्या किया—गांधीके आदेशोंकी तुमने उपेक्षा की। दूसरोंकी नकल करके तुमने झूठ बोलनेमें स्पर्धा की और सर्वश्रेष्ठ नम्बर लानेके उद्योगमें लगे रहे। जो जितना अधिक शुद्ध झूठ बोल सकता है उसीको तुमने आदर सम्मान दिया। झूठ ही खाना, झूठ ही पीना, झूठ ही ओढ़ना, झूठ ही बिछाना तुम्हारा प्रिय विषय हो गया।

फल क्या हुआ—तुम्हारा नैतिक बल गिर गया, आत्मिक बल घट गया, लोगोंमें विश्वास कम हो गया, मनोबल नष्ट हो गया। और खुद अपने आप पर विश्वास न रहा। प्रत्येक व्यक्तिको तुम भयकी नजरसे देखने लगे। स्वतन्त्र भारतके चेहरेकी कान्ति इस अशुभ कर्मसे मलिन हो गई। अतः सबसे पहले गांधीके इस प्रथम आदेशको मानकर सत्यका पालन करना चाहिए।

गांधीने कहा—"अहिंसा परमोधर्मः"

जीवमात्रको सुख शान्ति देना तुम्हारे जीवनका उद्देश्य होना चाहिये। यही परम धर्म है। देशकी रक्षाके लिये अधिकसे अधिक शक्तिका संग्रह करो और अन्यायी दुश्मनकी ओर मुख करके फूँको पर काटो मत, इसपर भी शत्रु न माने तो तृतीय नेत्र खोलकर भस्म कर दो। और शान्ति, सद्धर्मकी स्थापना करो।

तुमने क्या किया—शस्त्र संग्रहकी बेलामें निहत्थे बैठकर शान्ति शान्ति चिल्लाते रहे। अगर तुम्हें एक हजार पशु चरानेके लिये दे दिये जायँ तो क्या तुम बिना डण्डेके उनपर शासन और शान्तिकी स्थापना कर सकते हो? जंगली जानवरोंसे उनकी रक्षा जबानी कर सकते हो? यदि नहीं तो देशमें शान्ति और सद्भावकी स्थापनाके लिये तुम्हें अधिकाधिक शस्त्रबल, बुद्धिबल, आत्मबलकी आवश्यकता है।

अब भी समय है जाग जाओ, अहिंसाधर्मके पालनके लिये शक्तिका संग्रह करो। पर ध्यान रहे उसका उपयोग केवल अधर्म और आक्रामकके विरुद्ध ही किया जाय।

गान्धी ने कहा—अस्तेयका पालन करो

किसीकी भी कोई वस्तु बिना उसकी आज्ञाके मत लो। सदा इमानदार रहो। प्रत्येक वस्तु देशकी निधि है, परमात्माका रूप है उसका नुकशान मत करो। चोरी करना

पाप है। साधारण चोरीसे करोड़गुना पाप राज्यकी चोरीसे लगता है। घूस बेइमानो और काला बजारसे दूर रहो।

परन्तु तुमने इसके खिलाफ कार्य किया है।

गांधो ने कहा—अपरिग्रहको अपनाओ। आवश्यकतासे अधिक सामानका संग्रह मत करो। परन्तु तुमने सातपुस्त तक लिये संग्रह करके देशके शासनको दुर्बल कर दिया है।

एक उपाय

चोरी और संग्रह जैसे पापोंके प्रायश्चित करनेका केवल एक ही मार्ग है। अपने सम्पूर्ण धनको देशके नाम पर, भगवानके नाम पर, धर्मके नाम पर दान कर दो—त्याग दो, गरीबोंमें बाँट दो।

गांधो ने कहा—वेष सादा सरल और भारतीय रखो। पर तुमने नहीं माना। अब भी समय है सुधर जाओ। सब कुछ सम्भव है अपने पूर्वजोंके चरण चिन्हों पर चलोगे तो देश फिर सोनेकी चिड़िया हो सकता है।

गांधी ने कहा—प्रार्थना करो !

गान्धोजी प्रतिदिन परमात्मासे सुबह शाम प्रार्थना करते थे कि भगवान हम सब देश वासियोंको शक्ति और सुमति दो। परन्तु गांधीके बाद तुमने प्रार्थनाका प्रचार बन्द करके सिनेमाका प्रचार किया है। मांस-मदिराका प्रचार किया है।

गांधो ने कहा—दूध पीओ, इससे स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। गोधनसे देशकी आर्थिक और खाद्य समस्या सुधरी रहेगी। परन्तु तुमने दूध पीने पर ध्यान न देकर चाय और शराबको अधिक पसन्द किया।

गांधोजी ने कहा—निरपराध जीवोंकी हत्या मत करो यह अहिंसा नहीं है। परन्तु तुमने गौ, बकरी, भैंस और मुर्गी-मुर्गोंको मनमानी जिबह किया। मांसाहार बन्द करनेके वजाय मांस और अण्डेका प्रचलन बढ़ाया।

तुम्हारा कुकर्म ही युद्धरूपमें सामने खड़ा है अगर अब भी सुधर जाओ तो बेड़ा पार है। सुधर्म-सुकर्मसे ही सुखशान्ति का जन्म होता है।

तुम निर्धन नहीं हो

देशमें निर्धनताका रोना रोया जाता है। शराबी और विलासीके घर सदा धनको कमी रहती है। यदि देशको धनी बनाना चाहते हो तो गांधोकी आज्ञा मानकर कसम खाओ कि मर जायेंगे पर शराब नहीं पीयेंगे, विलासिताके साधन नहीं जुटायेंगे, तप त्याग

और दानको अपनायेंगे। अगर शराब पीना ही है तो राम नामका शराब पीओ जिसका नशा कभी नहीं उतरता है। देशभक्तिकी शराब पीओ जिसकी आज जरूरत है।

धन की कमी नहीं है

भारतमें धनकी कमी नहीं त्यागकी कमी है, सन्तोषकी कमी है। आज देशकी जनताको त्यागका मूल्य समझानेकी जरूरत है।

देशके लिये धन संग्रहका सरल नुक्सा

धन संग्रह करते समय यह ध्यान रखो कि अधर्म और अनाचारको प्रोत्साहित करके धन न संग्रह किया जाय। जनताका नैतिक, चारित्रिक, शारीरिक बल घटाकर धन न कमाया जाय। जनताकी सुप्त वासनाको जगाकर अथवा प्रेयमार्गकी ओर स्वाभाविक वृत्तियोंको जगाकर धन संग्रह जनताके नैतिक और चरित्रबलको कम करके जनबलको दुर्बल बनाता है।

अतः सदा स्वस्थ तरीकोंसे धनका संग्रह उचित है। सोनेका अण्डा देनेवाली मुर्गीका पेट फाड़कर अण्डा निकालनेका प्रयास मूर्खतापूर्ण है। ऐसी युक्ति करनी चाहिये कि वह स्वयं अधिकाधिक स्वर्ण प्रदान करे।

धन संग्रहका सही मार्ग

गरीबोंसे धन लेकर उन्हें और निर्धन करनेकी अपेक्षा तुम्हारा ध्यान उस ओर जाना चाहिए जहाँ स्वर्ण राशि संग्रहित है। देशमें सम्पन्न पूँजीपतियोंकी कमी नहीं। धन संग्रहके लिये जोर जबरदस्ती और असत्यका मार्ग ठीक नहीं। सही मार्ग यह है कि सुनियोजित ढंगसे विद्वान, त्यागी देशभक्तोंकी टोलियाँ बनाओ। वे लोग गरीबों और श्रमिकोंके पास जाकर उन्हें दुगना परीश्रम और इमानदारीसे सेवा करनेकी प्रेरणा दें। जो अभावग्रस्त निराश्रित हैं उन्हें हर प्रकारकी सहायता और सुविधा दें ताकि वे देशके लिये अधिकसे अधिक परीश्रम करें। जो लोग शासन अथवा राज्य कर्मचारियोंके अन्यायसे असन्तुष्ट और दुखी हैं उन्हें बौद्धिक शिक्षा अथवा उचित न्याय दिलवाकर सन्तुष्ट और सुखी करें। ताकि ये लोग संकट कालमें शत्रु द्वारा मिलनेवाले प्रत्येक प्रलोभनोंको त्यागकर निस्वार्थ पूर्वक सच्चे देश भक्तका कर्तव्य निभा सकें।

यही त्यागी विद्वान देश भक्तोंकी टोलियाँ गरीबोंके झोपड़ेमें उत्पादन, परीश्रमका संदेश देती हुई रईस पूँजीपतियोंके बंगले पर जायँ और जैसे भी हो उनके अन्दर सच्ची देशभक्तिका भाव भरें, जैसे गुरु गोरखनाथने भरा था। यदि तुम्हारा यह सद्प्रयास सफल हुआ तो वह पूँजीपति अपनी अपार सम्पत्ति देशके लिये त्यागकर तुम्हारी टोलीमें आ मिलेगा। इस प्रकार यदि

देशके सेठ साहूकार रईस और पूँजीपतियोंको देश भक्तिके पवित्र विचारों द्वारा अपने वशमें कर लो तो निस्सन्देह देशके पास इतनी सम्पत्ति और स्वर्ण हो जायँ कि वह अधिकाधिक महास्त्रोंका संग्रह कर सकता है।

जिन धनपतियों पर देशभक्तिका जादू न प्रभाव डाल सके उनके पास समर्थ सन्तोंको भेजकर विवेक, वैराग्यका उपदेश और वेदान्त घोष कराना चाहिये। वेदान्तका कुछ ऐसा प्रभाव है कि वह उन सम्पत्तिशालियोंको निगोटी लगाकर सर्वस्व त्याग करनेको वाध्य कर देगा। मायाकृत नाशवान संसारका सही रूप जान लेनेपर सीपीमें चांदीकी तरह भासनेवाले स्वर्ण खण्डों और धन दौलतका मोह शेष नहीं रह जाता है। झूठी मायाका त्याग मनुष्य तभी तक नहीं करता है जब तक उसे सच्ची समझता है।

सर्वश्रेष्ठ मार्ग

सरकार और शासनको, सेना और सुरक्षा विभागको धन-स्वर्णसे सम्पन्न बनानेका सर्वश्रेष्ठ मार्ग यही है कि अपार धनराशि पर मोह-अभिमान करके सर्पके समान बैठे हुए धनपतियोंको मायाका सही रूप दिखलाकर उन्हें वैराग्यवान बनाया जाय। यह कार्य आत्मज्ञानके प्रचारसे ही सम्भव है। जितने पूँजीपति हैं उन्हें आत्म कल्याणके मार्गपर लगानेके लिये गुरु गोरखनाथ, श्रीचन्द्र मुनि, शंकराचार्य, समर्थ रामदास जैसे सन्तोंको पुनः कर्मक्षेत्रमें अपना चिमटा बजाना चाहिये। 'जाग मछिन्दर गोरख आया' का अलख पुनः प्रत्येक पूँजीपतियोंके ड्योढ़ी पर लगाना होगा। उन्हें विवेक, वैराग्य, सम, दम, त्याग तितिक्षा आदिका पाठ पढ़ाना होगा।

अरबों रुपयोंका लाभ

देश भक्त भारतीय जनता, यदि अपने आदर्श पुरुष महात्मा गांधीकी वेषभूषाको, उनके रहन-सहनको प्रतिज्ञा पूर्वक इस संकट कालमें अपना ले तो देशको अरबों रुपयोंकी बचत हो सकती है।

अरबों रुपये प्रतिमास विलासिताको उकसाने वाले श्रृंगार प्रसाधनोंमें व्यय होता है। यदि जनता इन रुपयोंको बचाकर देशके लिए त्याग करे तो बहुत लाभ प्रद है।

सम्भव है विलासिताको कम करनेसे कुछ कल-कारखाने, मिल उद्योग आदि बन्द होंगे लाखों लोग बेकार होंगे। यह चिन्ताका विषय नहीं। यही लोग सेनामें भर्ती होकर, सेनाकी सेवाकर, अथवा अन्य आवश्यक उत्पादनोंमें लगकर अपना जीवन धन्य कर सकते हैं। ऐसा क्रान्तिमय त्याग और परिवर्तन समयानुकूल ही है।

रोटी कपड़ा सस्ता हो जायगा

यदि तुम गांधीके शुभ्र-सादे वेशको धारण कर लो और विलासिताको त्याग दो, अनावश्यक वस्तुओंका संग्रह न करो तो उत्पादकोंके गोदामोंमें अन्न और वस्त्र एकत्र हो जायेंगे, खफत कम होने पर स्वाभाविक है अन्न और कपड़ा सस्ता हो जायगा।

गांधीके वेषसे तात्पर्य यह नहीं कि तुम खद्दर नामक बहुमूल्य वस्त्रोंको व्यवहार करके सरकार पर बोझा बढ़ाओ गाँधोका वेष कम से कम कपड़ा और कम से कम लागतका प्रतीक है। चाहे वह मिलकी बनी मारकीन ही क्यों न हो, आज एक सूटकी जितनी कीमत है उतने में पूरे परिवारके लिए गांधीका वेष बन सकता है।

शुद्ध आहार

गाँधी जीने सदा आहारको शुद्ध रखने पर जोर दिया है। क्योंकि आहारका प्रभाव मन और विचारों पर पड़ता है। अखाद्य और अप्राकृतिक भोजनसे मनोबल प्रभावहीन होता है। चिन्तनकी क्षमता नहीं रहती, बुद्धि पवित्र विचारोंका चिन्तन नहीं करती, दया क्षमा शान्तिका सम्पादन नहीं हो पाता है। बुद्धिके दूषित होनेके कारण अहिंसा व्रतका पालन भी नहीं हो पाता है। यहीं आकर अधर्मका जन्म होता है जो विनाशका कारण है।

अतः शक्तिसम्पन्नको अहिंसा व्रतका सफलता पूर्वक पालन करनेके लिए अपने आहार-विहारको शुद्ध रखना चाहिये। इसीलिए गांधीजी संकट कालमें उपवास द्वारा शरीर मन इन्द्रियोंका शोधन करके पवित्र विचारों और समस्याके सही हलके लिए मनोभूमि तैयार करते थे।

खाद्य समस्या

तुम्हारे देशकी खाद्य समस्या पर संकटका कारण एक मात्र यही हैं कि गोधनका निरादर और उपेक्षा। इस बातको साधारण व्यक्ति भी जानता-मानता है कि जो कोई मनुष्य चौबीस घण्टेमें १ किलो अन्न खाता है यदि उसे १ किलो प्रतिदिन दूध पिलाया जाय तो कुछ ही दिनोंमें उसके अन्नकी खुराक आधी हो जायगी। यदि कन्द-मूल-फलकी भी मात्रा उसे आधा किलो मिलने लगे तो चौथाई किलो हो अन्नका खर्च रह जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि दूधके सेवनसे अन्नकी समस्या हल हो जाती है। यदि गोधनका समुचित आदर हो और जैसे आज आदमी पीछे एक सायकिल रखनेकी प्रथा है वैसे ही यदि आदमी पीछे एक गाय पाली जाय तो बाहरसे अन्न मगानेकी आवश्यकता नहीं रह जाती है।

गौओंका नस्ल सुधार

गांवोंमें अच्छी नस्लवाली दुधारु गाएँ ही रखनी चाहिये, शेष कम दूध देनेवाली छोटी गौओंको हिमालय अथवा विन्ध्याचलके जंगलोंमें चरनेके लिये व्यवस्था कर देनी चाहिये। इससे गोहत्याके पापसे भी बच जाओगे।

गोधन और बाहुबल

जनताका स्वास्थ्य और बाहुबल दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है, इसका भी कारण गोधन ही है। यदि पर्याप्त दूध मिले तो रोग और निर्बलताका भय नहीं रहता। आज भी गाय भैंसकी सेवा करनेवाले यादव, गोपाल और जाट लोगोंका स्वास्थ्य और बाहुबल अन्य लोगोंसे श्रेष्ठ है।

गोपाल कृष्ण

द्वापरमें भगवान् कृष्णने तत्कालीन खाद्य समस्याको हल करनेके लिये गोपालन एवं गो-संवर्धनको प्रोत्साहित किया। इस कार्यमें जनताकी विशेष रुचि उत्पन्न करनेके लिये स्वयं गोपाल नामको धारण किया। हाथमें मनमोहिनी मुरली लेकर गौओंको चराया। इसका फल यह हुआ कि घी-दूधकी नदी बहने लगी। फलस्वरूप आज तक गोपालनका कार्य करनेवाले ग्वाले लोग स्वस्थ और वीर होते हैं।

गोपाल नेहरू

कलियुगके कृष्ण श्री नेहरू यदि आज अपने व्यस्त जीवनमेंसे थोड़ा भी समय निकालकर अपने बँगलों पर स्वयं अपने हाथोंसे गौओंकी सेवा करें और लोक संग्रहके लिये कभी कभी समय निकालकर गोपाल कृष्णकी तरह गौओंको चरानेके लिये ले जायँ और उनके इस कार्यका चित्र सहित अखबारों द्वारा प्रचार किया जाय तो देखते ही देखते देशमें गोपालन-की एक लहर दौड़ जायेगी। अपटूडेड बाबू लोग जो गाय पालना और चराना छोटा काम समझते हैं वे लोग भी इस कार्यको करके गौरवका अनुभव करेंगे। जैसे श्री विनोबा भावेको झाड़ू लगाते देख बड़े बड़े लोग झाड़ू लगाने जैसे छोटे कार्यको भी महत्वपूर्ण श्रेष्ठ कार्य समझकर सेवा भावसे करते हैं।

गांधीजीकी बकरी

श्री गांधीजीने तो बकरीको पालकर यह सन्देश दिया है कि गाय तो मनुष्यकी माता है वह तो पूज्य और पालनीय है ही साथ ही भैंस और बकरी जैसे उपयोगी पशुओंका भी

महत्व कम नहीं है। गाँधीजी बकरीको भी संक्षरण देकर उसकी हत्या नहीं होने देना चाहते थे। उन्हींके देशमें गौहत्या जैसा जघन्य कार्य हो यह अक्षम्य और कृतघ्नता है। अतः इसका निराकरण यही है कि देशरत्न श्री नेहरूजी लोक-संग्रहके लिए गौका आदर उसी प्रकार करें जैसे गांधीजी बकरीका करते थे।

मौलिक बनो

यदि चाहते हो कि भारत देश पुनः जगद्गुरुके पदपर सुशोभिन हो तो यह परमावश्यक है कि तुम अनुकरण शीलता छोड़कर मौलिक तत्वोंका स्वयं अनुसंधान करो। हर क्षेत्रमें देश-काल, और परिस्थितिके अनुरूप अपने पूर्वज आदर्श पुरुषोंके जीवन एवं पदचिन्हों तथा वेद-शास्त्रोंसे प्रेरणा लेकर मौलिक सुख, साधन और शासन सूत्रोंका अनुसंधान करो। नया पाठ पढ़ने से अच्छा है पीछेका पढ़ा हुआ पाठ जो भूल गया है उसे याद किया जाय। यदि तुम्हारे आगे बढ़नेसे पीछे वालोंके लिए कोई लाभ प्रद पद्चिन्ह नहीं छूटते हैं तो तुम्हारा आगे बढ़ना व्यर्थ है। ठीक वैसे हो जैसे पीछे लिखे हुए पृष्ठों पर यदि तुम्हारे लेख सुरक्षित नहीं हैं तो आगे लिखनेका कोई अर्थ नहीं है। छेद वाले घड़ेमें पानी भरनेका परीश्रम व्यर्थ है। अतः चतुरता यह है कि आगे बढ़नेसे पहले पीछे पूर्वजों द्वारा प्राप्त धनको सुरक्षित करते जाओ। ऐसा न हो कि तुम्हारे वंश परम्पराकी बहुमूल्य थाती विदेशी दुश्मन नष्ट कर दें अथवा अपने घर उठा ले जाँय और तुम आगे बढ़नेके नशेमें इतना आगे बढ़ जाओ कि फिर पीछे एक कदम भी हटनेके लिए स्थान न रह जाय, अपना कहनेके लिए एक तिनका भी न रह जाय। यह दूरदर्शिता नहीं। अपने पूर्वज महापुरुषोंके पदचिन्हों पर वेद शास्त्रोंकी आज्ञाको मानते हुए, परम्परा, संस्कृति और मर्यादाकी रक्षा करते हुए सच्चाई, प्रेम, शान्ति सद्भावनाके साथ कठिन परीश्रम, तप, त्याग, दया, क्षमा, सम-दम-दण्ड-भेदके द्वारा दिव प्रतिदिव आगे बढ़ते जाना किन्तु केन्द्रको न छोड़ना। ब्रह्मज्ञानी भारतके वेद, शास्त्र, गुरु परमात्मा ही केन्द्र हैं। इनकी सेवा सुरक्षा सम्मृद्धि आज्ञापालन ही धर्म है। और अपने इस धर्मके संदेशको समस्त विश्वमें फैलाकर विश्वशान्ति और रामराज्यकी स्थापना ही हमारा कर्तव्य है। हमारे पूर्वज "कृणवन्तो विश्व मार्यम" का संदेश केन्द्र भूमि भारतसे चारो दिशाओंमें फैलाये थे। जैसे सूर्य अपना प्रकाश चारो दिशाओंमें फैलाता है वैसे ही भारतका ब्रह्मज्ञान चारो दिशाओंमें फैला था। सभोकी दृष्टि भारतकी ओर लगी रहती थी।

भरत पुत्र! उठो हीन भाव त्यागो, अपनी सुप्त ज्ञान ज्योतिको प्रकट करो। तुम्हें अपना खोया हुआ गुरुपद और गौरव प्राप्त करना है।

इमानदार हो

अपनी उन्नति और देशकी विजयके लिए तुम्हें प्रत्येक क्षेत्रोंमें इमानदार रहनेकी जरूरत है। तुम्हें सदा यह ध्यान रखना चाहिए कि तुम राष्ट्ररूपी मशीन एक पुर्जाके समान हो। जिस प्रकार एक पुर्जाके बिगड़ जानेसे सम्पूर्ण मशीन पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है, वैसे ही तुम्हारे दोष और दुर्बलतासे देशका बल क्षीण होता है। अतः अपनेसे देश और सरकारको भिन्न नहीं मानना चाहिये। सच्ची देशभक्ति यही है कि मन, वाणी और कर्म द्वारा अपने और देशके प्रति सदा इमानदार रहो।

तुम इकाई हो

जैसे आलोशान महलमें एक ईंट इकाई हैं वैसे राष्ट्र और समाजका एक व्यक्ति इकाई है। अनेक व्यक्तियोंके समूहको ही समाज और अनेक समाजोंके संगठनको राष्ट्र कहते हैं। राष्ट्रमें दुर्बलता तभी आती है जब उसकी इकाई व्यक्तिमें दोष आ जाते हैं। अत: देशको सबल बनानेके लिये सामाजिक और सामूहिक सुधारकी अपेक्षा प्रत्येक व्यक्तिका सुधार होना चाहिये। समाज और देश तो व्यक्ति एवं देशवासियोंका दर्पण है। यदि देश पिछड़ा है तो इसका अर्थ है व्यक्ति पिछड़ा है। समाज दूषित है तो व्यक्तिमें दोष है। अत: देशके कर्णधार समाज शास्त्रियोंका ध्यान समूहसे हटकर व्यक्ति पर होना चाहिये।

व्यक्तिका सुधार कैसे ?

मनुष्यमात्रके सुधारके लिए सर्वांगीण उन्नति आवश्यक है। और यह उन्नति बिना कठिन परीश्रम, तप, त्याग, दया, क्षमा, सन्तोष, विवेक, वैराग्य, शम-दम आदि सद्गुणोंके नहीं हो सकती है। और इन गुणोंके प्राप्तिका एकमात्र नुक्सा सद्ग्रन्थोंका स्वाध्याय, सत्संग, गुरुकृपा और पुरुषार्थ ही है।

अक्षय स्वराज्य

अनन्त काल तक अक्षय स्वतन्त्रताका उपभोग करनेके लिये धर्मपर चलना आवश्यक है। राज्य लक्ष्मीका मिलना कठिन नहीं बल्कि उसका चिरकाल तक भोगना कठिन है। अधर्म अन्याय द्वारा प्राप्त वैभव कुछ कालके बाद निश्चय ही नष्ट हो जाता है। तप त्याग आदि सद्गुणों द्वारा प्राप्त की हुई राज्यलक्ष्मी को भी यदि अधर्मपूर्वक भोगा जाय तो उसकी आयु क्षीण हो जाती है। अतः अक्षय स्वराज्यके लिये सत्य-धर्मका पालन करो और सत्य स्वरूप सर्वशक्तिमान, सत्-चित-आनन्दको साक्षात् करनेके लिये आत्मज्ञानका सम्पादन करो।

* इति शुभम् *

॥ ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः ॥

सर्व ग्रह शान्ति एवं संकटोंसे मुक्तिके लिए

मुक्ति सोपान का पाठ करें

हिन्दी, मराठी, गुजराती, सिन्धी, गुरुमुखी आदि भाषाओं में प्राप्य

⊙

श्री १०८ सद्गुरुदेव बाबा शाशराम उदासीन मुनिजी महाराज, श्रीतीर्थ रामटेकड़ी, पूना ने विश्व के समस्त नेमी, प्रेमी, शिष्य, सेवक एवं अन्यान्य गुरु परमात्माके श्रद्धालु भक्तोंको आदेश दिये हैं कि सभी नर-नारी शरीर रक्षा देश रक्षा और आत्म-कल्याणके लिए नित्य "मुक्ति सोपान" नामक ग्रन्थका पाठ-पूजन और जप करें। इससे ग्रहोंके कारण उत्पन्न हुई अशान्ति एवं त्रितापोंसे जनता मुक्त होती है।

ज्ञातव्य है कि गत अष्टग्रही योगके समय भयभीत जनताकी सुख-शान्तिके लिए परब्रह्म परमात्माकी प्रेरणासे बाबाजीको निमित्त बनाकर यह सन्त-वाणी प्रकट हुई थी। अनेक धर्मात्मा सज्जनोंने इसे छपवाकर जन कल्याणके लिए निःशुल्क वितरित करवाया था।

अभी भी ग्रहोंका कुप्रभाव देशभर व्याप्त है। ज्योतिषके अनुसार आगे सन् १९६३ के पूर्वार्ध तक स्थिति अशान्त ही प्रतीत होती है। अतः ग्रहोंकी शान्तिके लिए आत्म-बलका संग्रह एकमात्र उपाय है। सन्त-वाणीका पाठ और नामजपमें अथाह शक्ति है। समुद्रके समान महान भयंकर कष्ट भी गुरु परमात्माके शरणागत निरभिमानीके लिए गौ के खुर के समान नगण्य हो जाता है।

यह सत्य है कि सभी कष्ट-संकट प्रारब्ध वश ही होते हैं और प्रारब्ध अवश्य भोगना पड़ता है. उसे टाला नहीं जा सकता। जैसे डाक्टर प्रारब्धवश किसीके फोड़ेका आपरेशन करता है. आपरेशनसे कष्ट अवश्य होगा उसे टाला नहीं जा सकता परन्तु कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि डाक्टर लोग इन्जेक्शन द्वारा सुन्न करके आपरेशन करते हैं। अतः उस रोगी को कष्टका अनुभव नहीं होता है। इसी प्रकार गुरु कृपा, पाठ-जप का कुछ ऐसा प्रभाव है कि बड़े-बड़े कष्ट आकर चले जाते हैं, भक्त को उसकी आँच तक नहीं लगती है। प्रह्लाद का उदाहरण सबके सामने है। नामके प्रभावसे काँटे-फूल और अग्नि शीतल हो गई थी। किसी कवि ने भी कहा है—

साधन नाम सम नहिं आन
नामके प्रतापसे जलमें तरे पाषान।
रामसे बड़ नाम जा बल त्रिकत श्रीभगवान।
साधन नाम सम......॥

संशय विपर्ययको त्याग दो

"वृथा न जाय देव गुरु वाणी।" देव गुरु वाणीका प्रभाव अव्यर्थ है। केवल भौतिक साधनोंमें ही विश्वास करनेवाले स्थूल बुद्धिके आधुनिक लोग आत्म-बलसे ओत-प्रोत सन्तोंकी वाणीके प्रभावको नहीं मानते हैं। हालाकि गुरु नानकदेव, श्री चन्द्र, गुरुगोरख, समर्थ गुरु रामदास, गांधी, विनोवा आदिकी शक्ति और चमत्कार प्रत्यक्ष हैं परन्तु फिर भी संशय विपर्ययके कारण लोग उनके आदेश और पदचिन्हों पर चलकर आत्म-बलका संग्रह नहीं कर पाते हैं। जब भौतिक बल थककर बैठ जाता है तब सन्तोंकी कृपासे दैव बल, आत्मबलसे मानव जाति, देश और धर्मकी रक्षा होती है। भौतिक बल स्थूल साधनोंको लेकर चलता है और शरीरको प्रभावित करता है। परन्तु आत्मिक बल सूक्ष्म साधनों द्वारा मनको प्रभावित करता है। भौतिक बल जहाँ स्थूल शरीर पर शासन करता है वहाँ सन्त लोग सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर दोनों पर शासन करते हैं। सन्तोंकी वाणीके प्रभावमें तबतक विश्वास नहीं होता जबतक संशय-विपर्ययसे रहित होकर हमारा मन एकाग्र नहीं हो जाता है। मनके एकाग्र होने पर ही सूक्ष्म शरीरसे सम्बन्ध जुड़ता है। और बिना श्रद्धा, विश्वासके मन एकाग्र नहीं होता, सच्चा भजन, सच्चा पाठ-जप नहीं हो पाता।

संशय कहते हैं हर बातमें सन्देह युक्त बुद्धिसे अविश्वास करना। कुतर्क करना और बुद्धिको परमात्मासे सूक्ष्म समझकर अपने बुद्धि-बलका अभिमान करना। विपर्ययका अर्थ विपरीत बुद्धि, अर्थात् जो वस्तु जैसी है उसको वैसा न समझकर उसके विपरीत रूपको मानना जैसे जड़को चेतन समझना, रस्सीको साँप, सीपीको चाँदी और मृगजलको पानी समझना, इन्द्रियों द्वारा ज्ञात विषयोंको ही सत्य मानकर सर्वशक्तिमानकी सत्ता और उसकी मायामें अश्रद्धा करना। इन दो दोषोंके कारण ही मनुष्यका मन स्थिर नहीं हो पाता है। फलस्वरूप उसे श्रद्धा-विश्वास रूपी शिव संकल्पकी प्राप्ति नहीं होती और बिना इसके किया हुआ प्रत्येक आयास बालूमेंसे तेल निकालनेके समान व्यर्थ है।

अतः श्रद्धा विश्वास पूर्वक शिव संकल्पसे युक्त होकर—मुक्ति सोपानके पाठ-जप पूजन मननका फल सावरी मन्त्रकी भाँति चमत्कारी है। यदि देशवासियोंका मनोबल पवित्र और आत्मबल उन्नत हो जाय तो निश्चित रूपसे इस अदृश्य शक्ति द्वारा अन्यायी शत्रुके मन पर संक्रमण करके उसे स्वतः पराजयके उद्योग के लिये बाध्य किया जा सकता है। इसी प्रकार के चमत्कारमयी भस्मासुरकी कथा प्रसिद्ध है भोलेनाथ भगवान शंकरको सेवा द्वारा प्रसन्न कर भस्मासुरने वरदान प्राप्त किया कि मैं जिसके ऊपर हाथ रख दूँ वह जलकर भस्म हो जाय। शक्तिके अहंकारमें भस्मासुर अन्याय अधर्मपर उतर आया है। यहाँतक कि वह स्वयं वरदान देकर शक्तिशाली बनाने वाले शंकरपर ही हाथ रखकर उनका पद ग्रहण करने के लिए उतावला हो गया। शंकरने आत्मबलका प्रयोग किया और विष्णु भगवानने युक्तिपूर्वक भस्मा-

सुरका हाथ उसके ही ऊपर रखवा कर उसे भस्म करा दिया। यह है आत्मबलका सूक्ष्म प्रभाव जो शत्रु को कुण्ठित कर देता है उसकी बुद्धिको उल्टी कर देता है। शत्रु अपने ही जालमें फँसकर नष्ट हो जाता है।

अतः प्रत्येक प्राणीका यह कर्तव्य है कि भौतिक शक्ति और बुद्धि-बलका संग्रहके साथ ही गुरु परमात्माके शरणागत होकर आत्मबल का भी संग्रह करना चाहिये।

आत्मबलके लिये धनकी आवश्यकता नहीं

भौतिक दृष्टिसे निर्बल देशके लिये आत्म-बल ही एकमात्र महास्त्र है। कहा भी है "निर्बल के बल राम। जा दिन तेरो कोई नाहीं ता दिन आवे काम।" भौतिक अस्त्रोंके लिये जहाँ अपार धनकी आवश्यकता है वहां आत्मिक बल के लिये केवल शुद्ध और एकाग्र मनकी आव-श्यकता है। जैसे सूर्यकान्तमणिको सूर्यके सम्मुख करके अग्नि प्रकट की जाती है, वैसे प्रभु परमात्मा व्यापक अक्षय अविनाशी है उसकी कृपा वर्षा सतत् हो रही है। शुद्ध एकाग्र मन उसकी ओर लगाकर अपने शरीर और देश की रक्षा के लिए प्रार्थना करो, तुरन्त अलौकिक तेजवान शक्ति प्रकट होगी जिसके समक्ष शत्रु की आँखें चकाचौंध हो जाती हैं उसकी वाणीमें जादू आ जाता है। गांधीका उदाहरण सामने है। आधुनिक शस्त्रोंसे युक्त अंग्रेजोंकी सेनाके आगे उन्होंने कौन सी शक्तिका प्रयोग किया जिससे बिना युद्धके ही भारत स्वतन्त्र हो गया। रामायणमें कथा प्रसिद्ध है—बालिसे जो लड़ने जाता था उसका आधा बल घट जाता था। क्या बात थी, स्पष्ट है जप, पाठ, उपासना, सेवा द्वारा परमात्मासे बालिने वरदानमें आत्म-बलको प्राप्त किया था। इसीलिये वह अजेय था। देवासुर संग्राममें भी यही बात थी। देवता लोग असुरोंसे बार-बार पराजित होते थे। अन्त में उन्होंने ब्रह्माजी की रायसे उनकी आज्ञा मान कर आत्मबलका संग्रह किया और देवराज इन्द्र ने आत्मज्ञानका सम्पादन किया।

सद्ज्ञान होने पर सुमति आती है। सुमति के आते ही सभी देवताओं ने अपनी बिखरी हुई शक्ति को एकत्र कर दुर्गा के रूप में संग्रहित किया। सुसंगठित देव बल की अधिष्ठात्री दुर्गा को प्रत्येक देव समूहों ने अपने अपने भयंकर महान शस्त्रों को प्रदान किया। अपने तन मन धन का दान किया। तब सहस्रो हाथ वाली देव शक्ति दुर्गा ने इन्द्र के आत्म ज्ञान और देवताओं के आत्म बल के प्रभाव से प्रकट होकर अधर्मी असुरोंका भयंकर संहार किया।

इसलिये आज भारत की जनता को सुमति प्राप्त करने के लिये परमात्मा राम की शरण में जाकर, ब्रह्म स्वरूप सन्तों की शरण में जाकर प्रार्थना करनी चाहिये और आत्म बल का संग्रह करना चाहिये।

भारत को चर्खा चला कर स्वतन्त्र कराने वाले गांधी जी इस रहस्यमयी शक्ति को सम-झते थे और नित्य प्रार्थना करते हुये कहा

करते थे—

रघुपति राघव राजाराम ।
सबको सम्मति दे भगवान ॥

उन्होंने धन दौलत अस्त्र शस्त्र सेना आदि परमात्मा से नहीं माँगा। गांधी जी केवल भगवान से सुमति मागते थे। क्योंकि वे जानते थे कि सुमति मिल जाने पर देश को शेष आवश्यक वस्तुए अपने आप मिल जाती हैं।

अतः हमारे देशमें किसी वस्तुका अभाव नहीं है। अभाव है केवल सम्मतिका मनोबल का आत्म बल और आत्म ज्ञान का।

हम पुनः आपका ध्यान मुक्ति सोपानके पाठकी ओर दिलाते हैं। इसका श्रद्धा विश्वास पूर्वक पाठ निःसन्देह सर्वकष्टोंसे मुक्ति दिलाने वाला है। जैसे सावरी मन्त्रोंके शब्दार्थ पर ध्यान न देकर उसके प्रभाव और शक्ति पर विश्वास किया जाता है वैसे ही सन्तवाणी और गुरुवाणी पर पूर्ण श्रद्धा विश्वास ही फलदायक है। यह बाणी नाममयी है इसके भीतर परमात्माके श्रेष्ठ नाम ओतप्रोत हैं। पाठ करनेसे सहज ही इसका अनुभव हो जाता है।

निवेदक—
श्री अजित मेहता,
अध्यक्ष, श्रीतीर्थ रामटेकड़ी सेवक मंडल, पूना।

परमानन्द संदेशके आजीवन सदस्य

सहर्ष सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित गुरु परमात्माके परम भक्त सज्जनोंने परमानन्द संदेशके आजीवन सदस्य बनकर हमारा सहयोग किया है। आपके मंगलमय आत्मोन्नतिकं हम कामना करते हैं।

—सम्पादक

१—श्रीमान् सेठ ईश्वरदास मोहन लाल मेहता
विट्ठलभाई पटेलरोड बम्बई।

२—श्रीमान् सेठ कालीदास वल्लभदास दोसी
वाडी फलिया सूरत गुजरात।

धन्यवाद

श्री सेठ गोविन्द राम सिन्धीने 'परमानन्द सन्देश' के ११ नये ग्राहक बनाकर हमारा सहयोग किये हैं। हम सेठजी का आभार प्रदर्शन करते हुए धन्यवाद करते हैं, गुरु परमात्मा आपको आबाद रखें।

(पृष्ठ ८ कालम २ का शेष)

हितकर यही है इनका सुधार करो।
सावधान,
दूर से ही कर्तव्य करना तुम—
अग्नि में कूद कर
खुद को जलाना मत,
अपने ही हाथों
अपने ही मुख पर कालिख लगाना मत।
इन सब—
भटक हुई बहनों को
माता और पुत्री को
शासन और संयम की
अग्निमें डालकर
तपसे तपा लो,
कुन्दन सा
उनका रूप निखर आयेगा,
कलुष धुल जायगा
एक बात
और
मुझे कहनी है युवकों से
वीरों से
धीरों से
उफनाते यौवन से,
तेरा ही चरण चिन्ह
आने वाली पीढ़ी का पथ होगा।
मर्यादा खोना मत,
लोक लाज बेचकर
उच्छृंखल होना मत,
सबका तुम मान करो—
तेरा भी मान होगा।
माता और बहनों का आदर करोगे
तो
बल और पौरुष,
स्वर्ग सुख—
चरणों में लोटेगा।
ध्यान रहे—
विलासिता को
न्यौता दे घर में बिठाना मत।
विदेशी
अविवेकी जनके
वैभव विलास का
अनुकरण कर
अपनी सरकार पर
बोझा बढ़ाना मत
देश-काल
सभ्यता
संस्कृतिको भूलकर
भेष और भाषा
विदेशी अपनाना मत।
अपना घर
अपना देश
जैसा भी है अच्छा है,
इसी पर निष्ठा करो
इसी से प्यार करो
त्याग करो
तप करो,
दया दान क्षमा से

इसी का विकास करो
गैरोंके गीत गाना
मन की गुलामी है ।
नीति यह कहती है—
जहाँ मिले सद्‌गुण
दौड़
अपनाओ उसे,
शुभ का ग्रहण करो
अशुभ का त्याग करो
नीर और चीर का
विवेक अपनाओ तुम ।
आज हम स्वतन्त्र हैं,
साधन की बेला है—
योजनायें फैली हैं,
बाहुबल
बुद्धिबल
ज्ञान-विज्ञान बल
अर्जन करो ।
सीमा पर शत्रु है
घर में भी शत्रु है
यह तन शत्रु है
मन और इन्द्रियाँ
सबके सब शत्रु हैं,

संयम की बेला है
दमन की बेला है
शासन की बेला है,
सत्य के संबल से
बौद्धिक
आत्मिक
क्रान्ति की बेला है ।
ऐसी
शुभ बेला में
जाग उठो वीर पुत्र
तुमको
जगाने को
इतनी दूर आया हूँ ।
बूढ़े के लाठी की
बूढ़े के पगड़ी की
देश धर्म जाति की
कुल परिवार की
बहनों के राखी की लाज तेरे हाथ है,
मानव समाज का
विकास तेरे हाथ है,
भावी भारत का
भाग्य तेरे हाथ है ।

———

सूचना—यहाँ पर युवकों को सम्बोधित कर कहा गया है । नर और नारी राष्ट्ररूपी रथके दो चक्के हैं । बिना दोनों के कर्मक्षेत्र में पूर्णता नहीं । आगामी अंक में हम "जननी" को सम्बोधन कर कुछ कहेंगे । जिसे स्थानाभाव के कारण यहाँ नहीं प्रकाशित किया जा सका है ।

—सम्पादक

"परमानन्द संदेश" का उद्देश्य और नियम

‖ उद्देश्य ‖

"परमानन्द संदेश" विशुद्ध अध्यात्मिक-धार्मिक सचित्र मासिक पत्र है। परमात्माके नामका गुणगान करते हुए धर्म, भक्ति, वैराग्य, उपासना, जप, तप, साधन, सदाचार एवं आत्मज्ञान समन्वित साहित्य द्वारा जनताका मनोमञ्जन तथा सन्त महात्माओंके परमानन्द दायक संदेशको घर-घर पहुँचाना इसका उद्देश्य है।

नियम

१—"परमानन्द संदेश" का नया वर्ष कार्तिक मास से प्रारम्भ होकर आश्विनमें समाप्त होता है।

२—वर्षके किसी भी मासमें सदस्य वनाये जा सकते हैं परन्तु सदस्योंको चालू वर्षके पिछले अंक देकर आश्विनमें उनका वर्ष पूरा कर दिया जाता है।

३—प्रत्येक वर्षका प्रथम अंक विशेषांक होता है जो सदस्योंको निःशुल्क दिया जाता है।

४—सदस्य तीन प्रकारके वनाये जाते हैं—[१] साधारण, [२] स्थायी, [३] आजीवन।

५—साधारण सदस्यता शु० ५) वार्षिक स्थायी शुल्क ६ वर्षोंके लिये २५) रुपये हैं और आजीवन सदस्यता शुल्क १५१) रुपए हैं।

६—आजीवन सदस्यों की नामावली वर्षमें एक बार प्रकाशित की जाती है।

७—"परमानन्द संदेश" प्रति मासकी पहली दूसरी तारीख तक प्रकाशित हो जाता है।

८—परमानन्द संदेश प्रतिमास सावधानीके साथ जाँच कर भेजा जाता है। १५ तारीख तक न मिलने पर अपने पोस्ट आफिससे लिखित उत्तर प्राप्त कर कार्यालयमें भेजनेकी कृपा करें। पोस्ट आफिससे पूछताछ की जायगी और प्राप्य होने पर सेवामें पुनः अंक भेजकर आपको सन्तुष्ट किया जायगा।

९—प्रतिवर्ष २६ अक्टूबर तक जिन सदस्योंका चन्दा मनिआर्डर द्वारा आ जाता है उनको छोड़कर शेष सभी सदस्योंकी सेवामें नये वर्षका विशेषांक वी० पी० द्वारा भेजा जाता है।

१०—यदि नये वर्षमें सदस्य न रहना हो तो पत्र द्वारा सूचित कर देना चाहिए। ताकि वी० पी० भेजकर कार्यालयको हानि न हो।

११—वार्षिक शुल्क ५) मनीआर्डर द्वारा भेजकर आप कभी भी ग्राहक बन सकते हैं। अथवा पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मँगा सकते हैं।

प्रचारकों की आवश्यकता है

भगवान् कृष्ण ने सद्ज्ञान के अर्जन, प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसारको सर्व यज्ञों में श्रेष्ठ ज्ञानयज्ञ कहा है।

"परमानन्द सन्देश" रूपी ज्ञानयज्ञ में आपकी सेवाएँ आमन्त्रित हैं।

"परमानन्द सन्देश" को देश-विदेशमें सर्वत्र घर-घर प्रचारित कर इसका सदस्य बनाने के लिए वैतनिक, अवैतनिक, अथवा कमीशन पर पवित्र विचारों वाले उत्साही प्रचारकों की आवश्यकता है। प्रति सदस्य एक रुपया कमीशन दिया जाता है। इच्छुक सज्जन सम्बन्ध स्थापित करें।

शारदा प्रतिष्ठान, सी० के० १५।५१ सुड़िया, बुलानाला, वाराणसी।

सम्पादकीय—

"परमानन्द सन्देश"का राष्ट्र-हित-चिन्तन अङ्क आपके करकमलों में है। आज देशमें वीर रसकी लहर व्याप्त है। भारत आज क्षात्र धर्म पालनके लिए शस्त्र सज्ज हो रहा है। यह हमारे गौरव के अनुरूप ही है। एक पड़ोसी भाईने हमारी आत्म-ज्ञान साधनामें विक्षेप उत्पन्न कर दिया है। देशका बच्चा-बच्चा अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा तथा शान्तिकी स्थापनाके लिए कृत-संकल्प है। ऐसी शुभ बेलामें हम वीर वेषमें सुसज्जित भारतीय जनगणकी सेवामें यह लघु उपहार भेंटकर उसकी मंगलमय विजयकी कामना करते हैं।

उन वीर सैनिकोंकी सेवा में, जो हमारी रक्षाके लिये अपना खून बहा रहे हैं, दधीचिके समान हमारी हड्डियाँ भी काममें आ जाय तो अहोभाग्य है। हम देशके समस्त नागरिकोंसे प्रार्थना करते हैं कि वे इस संकटकालमें शुद्ध हृदय और सच्चाईके साथ तन, मन, धनसे जननेता श्रीजवाहर लाल नेहरूका साथ दें। भारतकी अन्तिम विजय जनबल और हमारे सहयोग पर ही निर्भर है। आत्म संशोधन तथा तप, त्याग, दान द्वारा परमानन्द मय परम धाम प्राप्त करनेका यही अनुकूल शुभ अवसर है। इसी समय हम देहाभिमान से रहित हो अपने अन्तःकरण को शुद्ध कर सकते हैं। गुरु परमात्मा हम सबको श्रेय मार्ग पर चलने को सुमति और शक्ति प्रदान करें, यही प्रार्थना है। जिस प्रकार धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की सिद्धिके लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है वैसे ही आत्मज्ञान एवं सर्वात्म भावकी सिद्धि तथा ईश्वर साक्षात्कार के लिए स्वतन्त्र देशका सुख शान्तिसे पूर्ण वातावरण आवश्यक है। अतः देशकी स्वतन्त्रता की रक्षा हमारा प्रधान कर्तव्य है। जय भारत।

—भद्रसेन

———

सर्व ग्रह शान्ति के लिए

❋ मुक्ति सोपान का पाठ कीजिये ❋

हिन्दी, गुजराती, मराठी, सिन्धी, गुरुमुखी आदि सभी भाषाओं में मिलता है। डाक खर्च के लिए १५ न० पै० का टिकट भेजकर मुक्ति-सोपान निःशुल्क मँगवाइए।

मिलने का पता—

श्रीतीर्थ रामटेकड़ी
हड़पसर, पूना।

शारदा प्रतिष्ठान
सी० के० १५।५१ सुड़िया, वाराणसी।

भद्रसेन वैद्य द्वारा कल्पना प्रेस, रामकटोरा रोड वाराणसी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

परमानन्द संदेश [रजिस्टर्ड संख्या] पौष २०१९
वर्ष ३, अङ्क ३ [ए० १५५७] जनवरी १९६३

प्रकाशित हो गया

जिसकी बहुत समय से प्रतीक्षा थी

ब्रह्मविद्या का दुर्लभ ग्रन्थ

उपनिषदों का सार

आत्म पुराण

परमानन्द संदेश के विशेषांक के रूप में गीतासार-
एकोत्तरी और ब्रह्मज्ञानामृत के साथ

लगभग ४०० पृष्ठों का विशेषांक

परमानन्द संदेश का सदस्य बनकर

निःशुल्क प्राप्त करें

सदस्यों के लिए वार्षिक चन्दा ५) पांच रुपये मात्र

रजिस्टरी डाक खर्च के लिये ५० न० पै०

आज ही ५-५० न० पै० मनीआर्डर द्वारा भेज कर लाभ उठावें

थोड़ी ही प्रतियां शेष बची हैं।

कार्यालय का पता:—

शारदा प्रतिष्ठान सी. के. १५।५१, सुड़िया
बुलानाला, वाराणसी।

रसायन प्रेस, नीचीबाग, वाराणसी।